१३०—चौथे मौत के डर से जो याद रहा आवे आदमी का चाल चलन और ब्यौहार दूसरों के साथ बहुत दुरुस्त हो जाता है, और संसार और उसके पदार्थों में पकड़ और मोह किसी क़दर ढीला हो जाता है, और शुभ करम की तरफ़ तबीअत रुजू होती है, और मालिक और उसके धाम का खोज दिल में पैदा होता है। यह डर सब के वास्ते चाहे संसारी हो या परमार्थी मुफ़ीद है, बल्कि परमार्थी के दिल में यह डर ज़रूर रहता है, और उससे परमार्थ की कार्रवाई जल्दी करवाता है ॥

१३१—पांचवां डर गुरू और सच्चे मालिक का—यह डर बग़ैर सच्चे सतसंग के पैदा नहीं होता। जिस किसी को भाग से संतों का या उनके सच्चे प्रेमियों का संग मिल जावे, तो अलबत्ता सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमां सुनकर, उनके चरनों में भय और भाव यानी डर और प्यार दोनों पैदा हो सक्ते हैं, और जब उपदेश लेकर अभ्यास शुरू किया जावे और दया से अंतर में कुछ रस मिलने लगे तब वह डर और प्यार बढ़ता जावेगा ॥

डर के सबब से कुल्ल बुरे कामों से बचाव होगा बल्कि अंतर में भी नाक़िस ख़्याल उठाने में डरेगा ॥

और प्यार के सबब से सेवा की उमंग उठेगी और अंतर अभ्यास का शौक़ बढ़ेगा, इसी तरह मन और इन्द्रियों की गढ़त और सफ़ाई होती जावेगी, और चाल चलन बदलता जावेगा, और दुनिया की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग पैदा होगा, और मेहर और दया के अंतर और बाहर परचे पाकर, प्रतीत मज़बूत होती जावेगी, और संत सतगुरु और मालिक के चरनों में दिन २ प्रेम और अनुराग बढ़ता जावेगा ।।

१३२—यह डर निर्मल है । जिस परमार्थी के मन में यह क़ायम हो जावे, तो उसका एक दिन पूरा काम बना कर छोड़ेगा—यानी सब बिकारों को आहिस्ते २ दूर करता हुआ, और मालिक का प्यार बढ़ाता हुआ, एक दिन धुर धाम में पहुंचावेगा, और निहचिंत कर देगा । इस डर की जिस क़दर सिफ़त कही जावे थोड़ी है, जैसा कि इस कड़ी में कहा है ।।

डर करनी डर परमगुरु डर पारस डर सार ।
डरत रहे सो ऊबरे ग़ाफ़िल खाई मार ।।

१३३—छठा डर ख़ानदानी इष्ट बग़ैरे का—यह डर संसारी और टेकी जीवों के मन में रहता है, और इस सबब से उनकी ख़ानदानी रसमें और पूजायें वग़ैरह जारी रहती हैं । इस कार्रवाई से दुनियादारों

को एक क़िस्म का सहारा मिलता रहता है—खासकर तकलीफ़ के वक़्त में वह अपने इष्ट वग़ैरे को याद करते हैं और मानते हैं और पूजा बग़ैरे बोलते हैं। और जब इत्तफ़ाक़ से फ़ायदा हो जावे तब अपने इक़रार के मुवाफ़िक़ भेंट पूजा और ज़ियारत व दर्शन वग़ैरा करते हैं। यह डर सिवाय वक़्त तकलीफ़ या कोई उत्सव जैसे शादी और पैदायश बच्चा वग़ैरे के, और वक़्तों में साधारण रहता है, और बिल्कुल दुनियावी है॥

१३४—सातवां डर आख़िरत यानी परलोक का—इस डर से यह मतलब है कि कुछ ऐसी कार्रवाई जैसे बर्त और दान पुन्य और खिलाना पिलाना बग़ैरा जीव से बन आवे, कि जिस्से मरने के बाद दुक्खों से बचाव हो जावे। यह डर अक्सर संसारी जीवों को जो टेकी और किसी क़दर भोले हैं होता है और वे अपने २ मज़हब के मुवाफ़िक़ वह कार्रवाई जो वास्ते हासिल होने सुख अस्थान के बाद मरने के बताई है, उसको थोड़ी बहुत शौक़ और हठ के साथ करते हैं, और उनकी ख़ैरात वग़ैरा से ब्राह्मणों और भेषियों और भी थोड़े ग़रीबों को फ़ायदा पहुंचता है। यह डर भी एक क़िस्म का

दुनियावी है, क्योंकि दुनिया और माया के घेर से निकलने का जतन इसमें कुछ नहीं किया जाता ॥

(२५) प्रेम की महिमां ।

१३५—ख़ौफ़ का ज़िक्र ऊपर हो चुका है । पहिले ख़ौफ़ ज़रूर चाहिये, ताकि परमार्थी चाल चलनी शुरू हो जावे, और फिर शौक़ पैदा होता जावेगा और फिर आहिस्ते २ उसकी तरक़्क़ी होकर प्रेम (यानी गहरा शौक़) प्रघट होगा ।

१३६—जिस वक़्त से प्रेम आया, उसी वक़्त से प्रीतम के साथ मेल शुरू हुआ, और जिस क़दर तरक़्क़ी प्रेम की होगी, उसी क़दर प्रीतम के साथ नज़दीकी होती जावेगी, और अंतर और बाहर पूरी सफ़ाई हासिल होगी और एक दिन पूरा काम बन जावेगा, यानी प्रीतम के धाम में पहुंच कर दर्शन और बासा मिलेगा ॥

१३७—पहिले डर के सबब से कुछ शौक़ पैदा होगा और तवज्जै प्रीतम की तरफ़ आवेगी, और बिकारों का ज़ोर और शोर घटेगा, और अभ्यास मामूली तौर से बनेगा, और उसमें कुछ रस मिलेगा । लेकिन जब कि वह डर और शौक़ प्रेम के साथ बदलना शुरू होगा, तब बिकारों की जड़ कटनी शुरू होगी और

रसीला और सुखाला अभ्यास बनेगा, और फिर प्रेम की तरक़्क़ी के साथ रस और आनन्द बढ़ेगा, और रस और आनन्द के बढ़ने से नया २ प्रेम जागता जावेगा, और दया और मेहर के परचे बराबर मिलते जावेंगे ॥

१३८—यह कुछ ज़रूरी बात नहीं है कि पहिले डर पैदा होवे। प्रेम अंग वालों के मन में प्रीतम और उसके धाम की महिमा सुनकर, गहरा शौक़ और प्रेम एक दम पैदा हो जाता है, और फिर अभ्यास के साथ रस और आनंद मिलने से दिन २ बढ़ता जाता है। और फिर यह डर पैदा होता है कि किसी करतूत से प्रीतम की नाराज़गी न हो जावे। यह डर बहुत निर्मल है, और बहुत जल्द सफ़ाई करता है, और प्रीतम से मेल कराता है ॥

१३९—सच्चे प्रेमी के मन में यह डर आपही पैदा होता है, और जब तक कि काम पूरा न होवे यानी प्रीतम के पूरे २ दर्शन न मिलें, तब तक दूर नहीं होता। यह डर बड़ा असर वाला है, और बिरले बड़भागी परमार्थियों के मन में प्रघट होता है ॥

१४०—यह डर असल में प्रेम स्वरूप है, और सत-गुरु की ख़ास दया का निशान है, और जिस घट

में प्रघट हुआ, गोया प्रेम और आनंद का भंडार खुलना शुरू हो गया ॥

१४१–प्रेम की सिफ़त बहुत से बहुत है, जहां प्रेम है वहां दीनता क्षिमा और सीतलता हमेशा उसके संग रहती हैं, और प्रेमी सदा मगन रहता है, और जिस किसी को भाग से उसका संग मिल जावे, वह भी मगन हो जाता है, और उसका भी रास्ता सुखाला चलने लगता है ॥

१४२—अहंकारी और अभिमानी और बिद्यावान और चतुरा प्रेमी को मूर्ख जानते हैं, क्योंकि वे संसारी हैं, और उनकी नज़र में दुनिया की लाज और बड़ाई और धन और माल बड़ी चीज़ें नज़र आती हैं, और इन्हीं के वास्ते वे जान तक देने को तइयार हो जाते हैं। लेकिन प्रेमी इन चीज़ों को तुच्छ और दुनिया का जाल समझ कर उनकी परवाह नहीं करता, और अपने कुल्ल मालिक के प्रेम में मस्त और मगन रहता है, और वह सच्चा मालिक हर वक़्त उसकी रक्षा और सम्हाल करता है। इस बात की समझ और प्रतीत दुनियादारों को जिनका प्रेम हैवानी और हरजाई है नहीं आसक्ती। हैवानी और हरजाई से मतलब यह है, कि अनेक जीवों और पदार्थों के मोह में फंसे रहते हैं, और अपने सच्चे मालिक की कभी सुध भी नहीं लेते ॥

१४३—जिस किसी के मन में गुरू और मालिक के चरनों का प्रेम है, उसका काम सब तरह से बना हुआ है। लेकिन जिसके मन में डर है और कुछ शौक़ भी रखता है, वह भी सतगुरु से मिलकर एक दिन प्रेमी हो जावेगा। पर वह लोग जिनके हिरदे में न प्रेम है और न डर है, बिल्कुल रूखे और फीके हैं, उनको सच्चा परमार्थ कभी हासिल नहीं होगा ॥

(२६) सरन की महिमां।

१४४—जीव निहायत निबल और कमज़ोर है, अपने बल से मन और इन्द्री और काल और करम का मुक़ाबला नहीं कर सक्ता है, और माया और उसके सामान का यहां इस क़दर ज़ोर और शोर है, कि उस्से बचाव बग़ैर मदद और दया समर्थ पुर्ष के, किसी सूरत में मुमकिन नहीं है ॥

१४५—पुराने वक़्तों में बड़े २ बैरागवान और ताक़त वाले हो गये, पर माया ने उन पर भी अपना चक्कर डाला, और उनको अपने लपेट में ले आई। फिर जीवों की जो कि निपट मन और माया के आधीन हैं, क्या ताक़त है, कि उनकी और अनेक प्रकार के भोगों की जो कि उन्होंने दुनिया में रचे हैं झटक झेल सकें ॥

१४६—सब जीवों को ज़रा ग़ौर करने से मालूम हो

सक्ता है, बल्कि उनके रोज़ मर्रे का तजर्बा और इम्-तिहान है, कि माया का कारख़ाना नाशमान और धोखे का असबाब है। लेकिन उसमें ऐसी खैंच शक्ती और लुभाव शक्ती रक्खी है, कि जान बूझ कर जीव उसमें फंस्ते चले जाते हैं, और उसी गिरिफ़्तारी की चाह बढ़ाते हैं, और उसके वास्ते जतन करते हैं ॥

१४७—बानी और बचन से दुनिया का हाल, जैसा कुछ कि है हर कोई समझ सक्ता है, और विद्या और बुद्धिवान अपनी किसी क़दर ज़ाहर में दुरुस्ती भी रखते हैं, लेकिन जब मन और माया का किसी वक़्त ज़ोर होता है, यानी अनेक तरह के भोग सन्मख आते हैं, और संसार की मान बड़ाई और प्रभुता लुभाती है, उस वक़्त सब झोका खा जाते हैं, और माया और उसके पदार्थों के अधीन हो जाते हैं ॥

१४८—इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं, कि जिस मुक़ाम पर पिंड में जीव की बैठक है, और जहां मन और इन्द्रियों और पांचों दूतों का ज़ोर से चक्कर चल रहा है, वही मुक़ाम गिरिफ़्तारी और फंसाव का है। सो जब तक जतन करके वह अस्थान नहीं छोड़ा जावेगा, तब तक जीव मन और इच्छा और माया और ममता के पंजे से छूट नहीं सक्ता ॥

१४६–पिछले वक़्त में जोगी और जोगीश्वरों ने प्राणों को रोक कर और ब्रहमान्ड में चढ़ा कर उस गिरिफ़्तारी के अस्थान से जीव को न्यारा किया, पर ब्रहमान्डी मन और ईश्वरी माया के घेर से बाहर नहीं निकले। और इस सबब से ब्रहमान्डी मन और माया के झकोले सहते रहे, और जनम मरन के चक्कर से चाहे बदेर हुआ उनका बचाव नहीं हुआ, अलबत्ता पिंडी मन और जीवी माया पर ग़ालिब रहे ॥

१५०—लेकिन प्राणायाम का अभ्यास इस क़दर कठिन और उसके संजम ऐसे मुशकिल हैं, कि जीवों की ताक़त नहीं है कि उसका अभ्यास दुरुस्ती से कर सकें। जो जोगी और जोगीश्वर पिछले वक़्त में गुज़र गये, वे ईश्वर कोटो थे, इस सबब से उनसे प्राणायाम का अभ्यास बन पड़ा, पर इनकी तादाद बहुत कम यानी तीन जुग में सिर्फ़ बास पच्चीस स्वरूप प्रघट हुये। अब इस ज़माने में कुल्ल जीव जीव कोटी में हैं, और इस वास्ते वे प्राणायाम के अभ्यास के हरगिज़ लायक़ नहीं हैं। जो कोई मन हठ से इस क़िस्म की कार्रवाई शुरू करेगा, वह चंदरोज़ में ही बीमार हो जावेगा, और जो ज़्यादती करेगा तो जान के नुक़सान का ख़ौफ़ है ॥

१५१—जो कि पिछले वक़्त के महात्माओं ने सिवाय प्राणायाम के और कोई जुगत, जीव के पिंड से न्यारा करने, और ब्रह्मान्ड में चढ़ाने की नहीं बर्णन करी, और प्राणायाम का अभ्यास किसी से, विरक्त होवे चाहे ग्रहस्त बन नहीं सक्ता, फिर उद्धार का रास्ता भी बन्द हो गया। और जीव बजाय उलटने के अपने निज घर की तरफ़, चौरासी में कसरत से उतरने लगे, और जो इस लोक में पैदा हुये, वह भी कसरत से कष्ट और कलेश अनेक तरह के भोगने लगे ॥

१५२—ऐसी हालत जगत की देखकर, यानी जीवों को महा कष्ठ और कलेश में गिरिफ़्तार मुलाहिज़ा करके, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल संत सतगुरु रूप धारन करके प्रघट हुये और अति दया करके उपदेश सहज जुगत यानी सुरत शब्द मारग का देकर, जीवों को समझाया कि थोड़ी सी मिहनत अभ्यास की गवारा करके वे अपने निज घर में जो कुल्ल मालिक का धाम है, उनकी मेहर और दया से पहुँच कर, काल और करम और मन और माया के जाल से छूट सक्के हैं ॥

१५३—जो जुगत अभ्यास की बताई वह ऐसी सहज करदी, कि जिसको ग्रहस्त और विरक्त और लड़का

और जवान और बूढ़ा और इस्त्री और पुर्ष और पढ़ा हुआ और अनपढ़ सब आसानी से कर सक्ते हैं। और थोड़े अर्से के अभ्यास के बाद, इसी ज़िंदगी में अपने मन और सुरत का सिमटाव, और चढ़ाव अपने घट में देख सक्ते हैं, और उसी क़दर अपने आपे को संसार और पिंड से न्यारा होता हुआ परख सक्ते हैं ॥

१५४—और एक बढ़ की महिमां राधास्वामी मत की यह है, कि वग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के, हर एक जीव चाहे मर्द होवे या औरत, सतसंग में, शामिल होकर और उपदेश लेकर, सुरत शब्द मारग की कमाई कर सक्ते हैं। सिवाय इस अभ्यास के और कोई जुगत निज घर में जाने की, क़ितई नहीं है बल्कि रची भी नहीं गई ॥

इस जुगत की कमाई के वास्ते कोई क़ैद वक़्त या नहाने धोने की नहीं है, जिस वक़्त फ़ुर्सत होवे और मन चाहे, उसी वक़्त एकान्त जगह में पलंग या चौकी या गद्दी पर बैठ कर अभ्यास हो सक्ता है, चाहे रात होवे या दिन, खाने से पेश्तर, या दो तीन घंटे बाद खाना खाने के, अभ्यास में बैठ सक्ते हैं। एक वक़्त में कम से कम आध घंटा, या जो फ़ुर्सत कम होवे तो बीस मिनट अभ्यास करना चाहिये, और भजन में तवज्जह

आवाज़ पर और सुमिरन ध्यान में तवज्जै रूप पर रखना चाहिये। और जब तक रूप प्रघट न होवे, तब तक उसका ख़्याल करके ध्यान करना चाहिये, और वास्ते आसानी अभ्यास के, दो या तीन लुक़मे मामूली मुक़र्ररा खाने से कम खाना चाहिये, ताकि सुस्ती न आवे, और स्वांस लेना बे तकल्लुफ़ जारी रहे ॥

१५५—हर चंद सुरत शब्द मारग का अभ्यास दया करके निहायत दरजे का आसान कर दिया है, पर बिना सच्चे शौक़ और मेहर और दया संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के, कोई दुरुस्ती के साथ रास्ता तै नहीं कर सक्ता। इस वास्ते कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन, प्रीत प्रतीत के साथ हर एक शख़्स को जो राधास्वामी मत में शामिल होवे दृढ़ करना चाहिये, तब अभ्यास दुरुस्त बनेगा और रास्ता जल्दी तै होगा ॥

१५६—दुनिया के पदार्थों और भोगों से पूरा बैराग करना, और चरनों में गहरा अनुराग लाना कुछ आसान काम नहीं है। लेकिन जो कोई सच्चे मन से राधास्वामी दयाल की सरन लेगा, उसका सब काम आसानी से बन जावेगा, यानी मुवाफ़िक़ ज़रूरत के उसको दोनों बैराग और अनुराग बख़्शिश में मिलेंगे। और संत

सतगुरु उसकी सुरत को अख़ीर वक़्त पर आप अपनी गोद में बैठा कर ऊंचे देश में ले जावेंगे, और दो तीन या चार जनम में धुर पद में पहुंचावेंगे ॥

१५७—जो कोई अपना बल लेकर अभ्यास करेगा और संत सतगुरु की दया का आसरा न लेगा, उस्से अभ्यास पूरा २ नहीं बनेगा। क्योंकि काल और माया के बिघनों को वह नहीं हटा सकेगा, और थोड़े अर्से के अभ्यास के बाद अहंकार में भर कर अपनी तरक़्क़ी को आप बंद कर देगा। यानी मान बड़ाई और प्रतिष्ठा की चाह लेकर, जीवों की तरफ़ मुतवज्जे हो जावेगा, और अपने नफ़े और नुक़्सान का तमीज़ नहीं कर सकेगा।

१५८—सरन की बराबर कोई जतन रास्ता सुखाला और जल्द तै करने का नहीं है इसमें हर वक़्त रक्षा संग रहती है, और बिघन दूर रहते हैं, और प्रेम और दीनता बढ़ती जाती है, कि जिस्से अभ्यास में रस और आनंद नित्त मिलता है ॥

१५९—सरन की महिमां जिस क़दर कही जावे थोड़ी है, हर एक को इसकी क़दर नहीं मालूम है। हर एक अपना २ पुरुषार्थ ज़ोर के साथ करता है, और फिर अपने बल से मन और इंद्री और इच्छा वग़ैरे पर

ग़ालिब नहीं हो सक्ता, और किसी वक़्त में माया के चक्कर में आकर रास्ते में थक कर रह जाता है, या संसार की तरफ़ झोका खाकर उलट आता है ॥

(२७) हिदायत यानी उपदेश कुल्ल जीवों को ।

१६०—इस बचन को ग़ौर के साथ पढ़ने से मालूम होगा, कि हर एक जीव पर चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपनी सुरत के कल्यान के, यानी निज घर में उलटा कर पहुंचाने के लिये, लाज़िम और फ़र्ज़ है, कि पिंड में उसकी बैठक के मुक़ाम से, मन और सुरत को अंतर में ऊंचे की तरफ़ सरकाने का जतन, सुरत शब्द मारग के मुवाफ़िक़ संत सतगुरु से उपदेश लेकर, थोड़ा बहुत रोज़मर्रा करे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर, उनकी दया के आसरे कार्रवाई करे, और प्रेमाभक्ती की रीत के मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत बर्ताव करे, तो रफ़्ते २ एक दिन निज धाम में पहुंचकर बासा पावेगा, और अमर आनंद को प्राप्त होगा ॥

१६१—शब्द सब जगह भरपूर है, लेकिन बिना दर्शन और उपदेश संत सतगुरु के, कोई उसका भेद या अभ्यास की जुगत जान नहीं सक्ता । इस सबब से पहिले संत सतगुरु और उनकी संगत का खोज ज़रूर

है, और जब वे मिल जावें, तब उनका सतसंग गहरा करके और उपदेश लेकर अभ्यास जारी करना चाहिये ॥

१६२—मालूम होवे कि संत अथवा राधास्वामी मत में, मांस और मदिरा और कुल्ल नशे की चीज़ों का खाना पीना मना है। यह दोनों अभ्यासी के अंतर मुख कार्रवाई में बहुत ख़लल डालते हैं ॥

(२८) गोश्त खाने का नुक़सान।

१६३—गोश्त खाने से मन किसी क़दर मलीन और भारी और सख़्त और बेरहम हो जाता है और वतज्जह उसकी बाहर और नीचे की तरफ़ झुकाव रखती है ॥

१६४—मुर्दा जिसम किसी क़दर नापाक समझा जाता है, उसको छूकर लोग हाथ धोते हैं या अस्नान करते हैं, और हिंन्दुओं में जो मुर्दे को आग देता है, वह तेरह दिन तक दुनिया के कारोबार से अलहदा, पर-हेज़गारों के मुवाफ़िक़ गुज़रान करता है। तो अब ख़्याल करो कि मुर्दे के मास को धोकर और देगची में पकाकर खाना, अपने हिरदे को जानवरों का मसान और क़बरस्तान बनाना हुआ कि नहीं। इस्से ज़्यादा और क्या नापाकी होगी, और फिर ऐसा मन अपने घट में ऊंचे देश, यानी कुल्ल मालिक के धाम की तरफ़ चलने के क़ाबिल कैसे हो सक्ता है ॥

१६५—सब कहते हैं कि मालिक का नूर और भेद हर एक मनुष्य के हिरदे में धरा है, फिर जिस जगह कि जानवरों का मसान या क़बरस्तान बनाया गया वहां वह नूर पाक कैसे ठहर सक्ता है ॥

१६६—सच्चे परमार्थी अभ्यासी का मन नरम और मुलायम और निर्मल और दुनिया की ख़्वाहशों से किसी क़दर ख़ाली होना चाहिये, तब मालिक के नूर यानी शब्द की धार उसमें उतरे और ठहरे, और चरनों का प्रेम यानी इश्क़ पैदा होवे। और जो मन की हालत बरख़िलाफ़ इसके है, और उसमें इन्द्री भोगों की चाह की तरंगें उठती रहती हैं, तो वह क़ाबिल अभ्यास सुरत शब्द मारग के, यानी चढ़ाई ऊंचे देश की तरफ़ के कैसे हो सक्ता है, और उसमें मालिक के चरनों की भक्ती कैसे जागे और ठहरे ॥

१६७—कुल्ल जानवर बनिसबत मनुष्य के ओछे और मलीन हैं, फिर उनके मांस का अहार करना और भी ज़्यादा मलीनता को पैदा करेगा, और मन को ख़्याला-लात फ़ासिद यानी मलीन तरंगों में भरमावेगा और उसकी परमार्थी कार्रवाई में भारी ख़लल पड़ेगा ॥

१६८—जबकि अनेक क़िस्म की ग़िज़ा जो कि ज़मीन से पैदा होती है, जैसे अनाज और मेवा तर

और ख़ुश्क मौजूद है, और बनिसबत गोश्त के सस्ता मिल सक्ता है, और मुवाफ़िक़ क़ौल डाक्टरों और हकीमों के, मनुष्य को ज़्यादा ताक़त दे सक्ता है, फिर क्या ज़रूर है कि दूसरे जानवरों को क़तल करके, उनके मास का अहार किया जावे। और इस क़िसम की चीज़ों में से घी और दूध और मिठाई और गेहूं चना उर्द और मसूर हैं, जिनके इस्तेमाल से बहुत ताक़त पैदा हो सक्ती हैं।

१६६—संसारी जीवों को जोकि परमार्थ यानी अपने जीव के कल्यान की तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं, और रात दिन दुनिया के कारोबार, और अपने भोगों की चाह के पूरा करने के जतन में ख़र्च कर रहे हैं, इख़्तियार है कि वे चाहे सो खावें। पर सच्चे परमार्थी को जो अपने घट में अभ्यास करके, मालिक का दर्शन चाहता है, ऐसी गिज़ा के खाने से जो उसके अभ्यास में खलल डाले ज़रूर परहेज़ करना चाहिये—नहीं तो अभ्यास में जैसा रस चाहिये नहीं मिलेगा, और न दुरुस्ती से मन और सुरत की चढ़ाई होगी॥

(२८) शराब और भंग और दूसरे नशों के खाने पीने का नुक़सान।

१७०—डाक्टर और हकीम और सब दुनिया के लोग कहते हैं, कि नशे की चीज़ खाने या पीने से दिमाग़

में ख़लल पैदा होता है, और जिसम के ऐज़ायरईसा यानी बड़े और ख़ास अंगों को जैसे दिल और जिगर और मेदा वग़ैरे को ख़ास नुक़्सान पहुंचता है। और नशे की ज़्यादती से और सख़्त बीमारियां पैदा होकर, नशे बाज़ की ज़िंदगी को ख़राब कर देती हैं, और अक़्ल में भी फ़ितूर[1] आता है, बाजी जगह जान का नुक़्सान हो जाता है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को नशे की चीज़ों से आम तौर पर परहेज़ करना मुनासिब है॥

१७१—ख़ास बीमारियों में जो डाक्टर या हकीम, शराब या अफ़यून वग़ैरे का थोड़े मिक़दार के साथ इस्तेमाल करावें, तो कुछ मुज़ायका नहीं है, उसमें नशा नहीं पैदा होगा या बहुत थोड़ा होगा। और चंदरोज़ के वास्ते यानी जब तक कि बीमारी दूर न होवे, वह कार्रवाई जारी रहेगी॥

१७२—जितने नशे हैं वह या तो मन और इन्द्रियों की धारों को भोगों की तरफ़ रुजू करते हैं, या मन और इंद्री और बुद्धि को सिथल और बेकार कर देते हैं कि फिर कार्रवाई दुनिया और परमार्थ की मुतलक़ दुरस्त नहीं बन सक्ती है। यह दोनों हालतें परमार्थी अभ्यास के वास्ते नुक़सान करने वाली हैं॥

---

१ नुक़सान।

१७३—जो कोई नशा पीकर अभ्यास करेगा उसको रस नहीं आवेगा बल्कि गुम यानी लै हो जावेगा, और बाद जागने के यह समझेगा कि मुझ से अभ्यास खूब बना, और किसी क़िसम की गुनावन या ख़्याल पेश न आये। ऐसी उलटी समझ से अहंकार पैदा होगा, और वह उसका भारी नुक़्सान करेगा॥

१७४—बाद नशा खाने या पीने के देर तक उसका असर रहता है, और फिर ख़ुमार की हालत में सुस्ती और काहिली देर तक रहती है, कि जिसके सबब से कोई कार्रवाई नशेबाज़ आदमी से दुरुस्त नहीं बन सक्ती॥

१७५—अक्सर नशेबाज़ आदमी बे वास्ते अपनी बे अक़्ली से, ज़रा २ सी बात पर ग़ुस्से में भर कर तकरार और लड़ाई कर बैठते हैं, और झगड़े बखेड़े को बढ़ाते हैं। यह आदत उनके मन को ऐसा ख़राब कर देती है, कि वे क़ाबिल सुन्ने और समझने परमार्थी या नसीहत के बचनों के नहीं रहते। और जो कोई उनको नशा पीने से रोके या समझौती देवे, उसके दुश्मन बन जाते हैं, और उसको किसी न किसी तरह दुख पहुंचाना चाहते हैं। यह स्वभाव परमार्थ के बिल्कुल बरख़िलाफ़ है॥

१७६—नशेबाज़ आदमी के क़ौल और फ़ेल यानी उसकी बात और चाल का पूरा ऐतबार नहीं हो सक्ता क्योंकि वह नशे या ख़ुमार की हालत में, जिस तरफ़ झुक जावे, अपनी हद्द और ताक़त से ज़्यादा बातें बनाता है, और पीछे उनको भूल जाता है, और उनका ख़्याल भी नहीं करता। यह आदत भी परमार्थी चाल के ख़िलाफ़ है ॥

(३०) ततिम्मा।

यानी आख़री बचन

१७७—मालूम होवे कि यह बचन मनुष्यों के उपदेश के वास्ते है, और वे इसको सुनकर और समझ कर, ज़रूर थोड़ी बहुत इसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने को तइयार होवेंगे। और संतों के बचन की जांच और परख अपने अंतर में अभ्यास के साथ करेंगे, और फिर थोड़ा बहुत रस और आनन्द पाकर, अपनी प्रतीत और प्रीत संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में दिन २ बढ़ाते जावेंगे कि जिसको उनको रहनी से, हर एक शख़्स जो उनके संग रहता है, किसी क़दर परख सकेगा ॥

१७८—लेकिन वे लोग कि जो सूरत में मनुष्य हैं, पर सीरत यानी स्वभाव और रहनी उनकी मुवाफ़िक़

पशुओं के है, इस बचन को सुनकर अपने मन में सख़्त नाराज़ होंगे। और संतों के उपदेश और बानी और बचन में, अपनी ओछी और नाक़िस समझ से कसरें निकालनें को तइयार होंगे और संत सतगुरु और उनके सतसंगियों को, हर एक तरह के इल्ज़ाम और बुराई लगावेंगे, और बेख़ौफ़ उनकी जाबजा निंदा करेंगे, और जो कोई संतों के बचन को मानेगा या मान्ने को तइयार होगा, उसको धमका कर रोकेंगे, और उस्से एक क़िसम की अदावत पैदा करके उसकी हंसी उड़ावेंगे। ऐसे लोगों को यह बचन दिखाना या सुनाना मुनासिब नहीं है॥

१७६—यह लोग निपट दुनियादार हैं, और अपनी मौत और परलोक का कुछ फ़िक्र नहीं करते और उनको पशू या हैवान की सीरतवाला इस सबब से कहा गया, कि वे पशुओं के मुवाफ़िक़ मिहनत करके, अपने तईं और अपने कुटम्ब को खिलाते पिलाते हैं और हमेशा धन और भोगों की प्राप्ती के वास्ते जतन सोचते और करते रहते हैं। लेकिन सच्चे मालिक और करतार का खोज कभी नहीं करते। देखो यही हाल पशुओं का है, कि मिहनत करके आप खाते हैं, और अपने पालनेवालों को खिलाते हैं, और इन्द्रियों बिषयों

का भोग भी करते हैं, पर कुल्ल मालिक को नहीं चीन्ह सक्के, और न अपने जीव के निरवार के वास्ते कुछ कार्रवाई कर सक्के हैं। ऐसे लोगों की आदत है कि जो कोई परमार्थी बचन उनको सुनावे, उसकी हंसी उड़ाते हैं, और बुरा भला भहते हैं। और अपनी आख़िरत यानी परलोक के सुधार के वास्ते मुतलक़ तदबीर नहीं करना चाहते, बल्कि कुल्ल मालिक की मौजूदगी में भी, बाज़ों के मन और अक़ल शक और शुभा पैदा करते हैं, और दूसरों को भी जो उनकी सलाह माने गुमराह करते हैं, यानी परमार्थ की कार्रवाई से बाज़ रखते हैं ॥

१८०—ऐसे लोगों की सोहबत से परमार्थी आदमी को हमेशा बचना चाहिये, नहीं तो उसकी समझ बूझ और कार्रवाई में, यह लोग अपनी नाक़िस और पापों की भरी हुई बुद्धी से, अनेक तरह के बिघन और ख़लल डालेंगे। और जो इत्तफ़ाक़ से उनका संग कुछ अर्से तक रहा, तो ज़रूर उसको अपनी सोहबत में मिला कर, हैवानी स्वभाव और कार्रवाई सिखाकर ख़राब कर देंगे ॥

राधास्वामी सहाय

शब्द

मन तू सुन ले चित दे आज ।
राधास्वामी नाम की आवाज़ ॥
अनहद बाजे घट घट बाजें ।
अनुरागी सुन सुन आराधें ॥
प्रेम भक्ति का लेकर साज ॥ १ ॥
तीन लोक में अनहद राजे ।
सत्तलोक सत शब्द बिराजे ॥
तिस परे राधास्वामी नाम की गाज ॥२॥
शब्द की महिमा संतन गाई ।
जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई ॥
कर दिया उनका पूरा काज ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम हिये में धारा ।
सोई जन हुआ सब से न्यारा ॥
त्याग दई कुल जग की लाज ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम प्रीत जिन धारी ।
राधास्वामी तिसको लिया सुधारी ॥
दान दिया वाहि भक्ती दाज ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम है अपर अपारा ।
राधास्वामी नाम है सार का सारा ॥
जो सुने सोई करै घट में राज ॥ ६ ॥

———

बचन-३५

मालिक अपने निज बच्चों से गहरी प्रीत और प्रतीत चाहता है, और जिसकी ऐसी हालत है वही गुरुमुख है, और वही निज धाम पावेगा ॥

१—रचना में कुल्ल जीव यानी सुरतें कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस यानी बच्चे हैं, और उन सब पर आम तौर की दया है, और सब को दुनिया का सामान मुनासिब तौर पर दिया है ॥

२—इन सुरतों के तीन दरजे हैं–उत्तम मध्यम और निकष्ट–(१) उत्तम वह हैं जिनके मन में दुनिया का हाल नाशमान्ता, और उसके पदार्थों का ओछापन देखकर, खोज कुल्ल मालिक और उसके निज धाम का जो कि अमर और अजर और आनन्द और प्रेम का भंडार है, और शौक़ उसके प्राप्ती का, पैदा हुआ है। (२) मध्यम वह सुरतें हैं कि जिनको जो सामान दुनिया का मिला है उसमें प्यार है, और उसकी तरक़्क़ी हाल में और आइंदा को बाद छोड़ने इस देह और देश के चाहते हैं। और इस मतलब से परमेश्वर और औतारों और देवताओं का आराधन

करते हैं, और कोई २ इनमें से मुक्ती की चाह उठाकर परमेश्वर के लक्षस्वरूप से मिलना, या उसके लोक में उसके सन्मुख रहना चाहते हैं। (३) तीसरे निकष्ट सुरतें वह हैं कि जो दुनिया के भोग बिलास में मगन हैं, और जो कुछ कि सामान उनको मिला है, उसी को ग़नीमत समझ रहे हैं, और उसको बढ़ाना चाहते हैं और आइंदा का यानी इस देह के छोड़ने के बाद का कुछ ख़ास तौर पर फ़िकर और जतन नहीं करते हैं ॥

३—उत्तम दरजे की सुरतें जो सच्चे मालिक के चाहने वाली हैं, वह राधास्वामी दयाल की ख़ास प्यारी हैं, और उन पर ख़ास दया होती रहती है, और बाक़ी सुरतों पर आम तौर की दया दरजे ब दरजे जारी रहती है ॥

४—उत्तम सुरतें कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का पता और भेद और जुगत चलने और मिलने की दरियाफ़्त करना चाहती हैं। लेकिन यह तहक़ीक़ात थोड़ी बहुत तसल्ली देने के मुवाफ़िक़, सिवाय संत अथवा राधास्वामी मत के और किसी मतवालों से नहीं हो सक्ती है। यानी सिर्फ़ संत सतगुरु या उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से यह भेद मिल सक्ता है, और बाक़ी के जीव इस

हाल से बिल्कुल बेख़बर हैं, या पूरी वाक़फ़ियत नहीं रखते, और न उस पर अमल करते मालूम होते हैं ॥

५—उत्तम जीव का मेला संत सतगुरु के संग मौज से वक़्त मुक़र्ररा पर होगा। उसको बहुत कोशिश तलाश करने की नहीं करनी पड़ेगी। और जब वह उनके सन्मुख आवेगा, तब बचन सुनते ही उसको शान्ती आवेगी, और उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत जागेगी ॥

६—भेद सुनकर उत्तम सुरत यानी प्रेमी जीव को मालूम होवेगा, कि कुल्ल मालिक का धाम सब के परे है और सब से ऊंचा है, यानी माया के घेर के पार है, और उस देश में माया नहीं है। और जो चेतन्य धार आदि में उस धाम से निकली वही शब्द की धार है, और वही कुल्ल रचना की करतार है, और जो कोई उलट कर निज धाम में पहुंचना चाहे, वह उसी धार को पकड़ कर यानी शब्द की धुन को सुनता हुआ चले, तो वह एक दिन संत सतगुरु की दया और राधास्वामी दयाल की मेहर से निज धाम में पहुंच सक्ता है ॥

७—प्रेमी जीव को संत सतगुरु के संग से यह भी ख़बर पड़ेगी, कि रचना में तीन दरजे हैं। पहिला कुल्ल

मालिक का देश जहां चेतन्य ही चेतन्य है और माया नहीं है, और दूसरा ब्रह्म और माया देश, जहां निर्मल चेतन्य और शुद्ध माया की मिलौनी से रचना हुई और जिसको ब्रहमान्ड कहते हैं, और तीसरा जीव और इच्छा देश, जहाँ निर्मल चेतन्य और मलीन माया की मिलौनी से रचना हुई, और जिसको पिंड कहते हैं ॥

इसी देश से जीव संतों का सतसंग और उनके उपदेश की कमाई करके, पहिले ब्रहमान्ड में और फिर सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में जा सक्ते हैं ॥

८—संत सतगुरु का उपदेश यही है, कि सुरत को शब्द में लगाकर चढ़ाना चाहिये, और इसको सुरत शब्द योग कहते हैं। और जो कि मन और माया का ज़हूर दूसरे दरजे से हुआ है, और पिंडी मन ब्रहमाण्डी मन की अंस है, सो यह मन और इन्द्रियां भी सुरत के संग उलट कर, अपने २ निकास के अस्थान पर पहुंचेंगीं।

९—सुरत का मन और माया के देश से न्यारे हो कर अपने निज घर में पहुंच कर, सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का विलास और आनंद को प्राप्त होना, सच्चा और परा उद्धार कहलाता है। यानी जनम मरन और दुख सुख और

कष्ट और कलेश से क़तई छुटकारा हो जाना, और अमर और पूरन आनंद को प्राप्त होकर निज धाम में, जो अमर अजर और प्रेम और आनंद का अथाह और अपार भंडार है, विश्राम पाना ॥

१०—तीसरे दरजे की रचना में दुख विशेष और सुख कम है, और दूसरे दरजे की रचना में सुख विशेष और दुख बहुत कम है, और पहिले दरजे में सुख ही सुख और आनंद ही आनंद हैं, और दुख और कलेश का नाम भी नहीं है ॥

११—इस लोक में जीवों का बंधन देह और इन्द्री और मन के साथ अपने अंतर में, और बाहर की तरफ़ कुटम्ब परवार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और बहुत से जीव जिनके साथ जब तब काम पड़ता है, और भोगों और पदार्थों वग़ैरे में हो गया है, और इन्हीं बंधनों के सबब से दुख सुख भोगना पड़ता है। जो कि कुल्ल रचना यहां की ओछी और नाश-मान है, इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि यहां कोई जीव या कोई चीज़ इस क़ाबिल नहीं है कि उसके साथ मन का बंधन किया जावे। सिर्फ़ कारज मात्र या ज़रूरत मात्र उनके साथ मेल और मिलाप करना चाहिये, और उसी मुवाफ़िक़ हर एक के साथ

अपना बर्तावा दुरुस्त करना चाहिये, जैसे कि कोई आदमी परदेश में रह कर हर एक से प्रीत भाव करता है, लेकिन अपने घर की याद ख़ूब रखता है और जब मौक़ा मिलता है, तब अपने वतन को बहुत ख़ुशी के साथ जाता है, इन परदेसियों की मुहब्बत उसको ज़रा नहीं अटका सक्ती ॥

ज्यादह मोह में ज़्यादह दुख सहना पड़ेगा, क्योंकि एक दिन वह बंधन काल ज़बरदस्ती तोड़ेगा ॥

१२—हर एक बड़े दरजे में कितने ही छोटे दरजे हैं, जो संत फ़रमाते हैं कि जैसे इस लोक की रचना के बंधनों का ज़िकर ऊपर किया गया, ऐसे ही थोड़ा बहुत सब दरजों में पिंड देश और ब्रहमाण्ड के समझना चाहिये। यानी इन दरजों की रचना में दिल लगाने और बंधन करने से, प्रेमी अभ्यासी आगे क़दम बढ़ाने से रह जावेगा, यानी अपने निज घर में नहीं पहुंचेगा और जो कि यह देश माया के घेर में हैं, इस वास्ते चाहे देर से होवे या सबेर जनम मरन का चक्कर जारी रहेगा ॥

१३—जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम और आनंद के भंडार हैं, और जीव उनकी अंस भी प्रेम रूप है, और जो चेतन्य धार कि आदि में कुल्ल

मालिक के चरनों से निकस कर, रचना करती हुई नीचे उतरी है, वह भी शब्द और प्रेम की धार है, इस वास्ते ज़ाहिर है कि जीव से कोई काम संसारी या परमार्थी, बग़ैर प्रेम या इश्क या शौक़ के नहीं बन सक्ता। इसलिये संतों ने अपने मत और उपदेश में प्रेम की मुख़्यता रक्खी है, यानी बग़ैर प्रेम के निज घर का रास्ता तै नहीं हो सक्ता। और जिस मत में कि प्रेम यानी भक्ती की मुख्यता नहीं है वह मत और उसके अभ्यास का तरीक़ा ख़ाली समझना चाहिये ॥

१४—जोगी और जोगीश्वरों ने भी उपासना यानी भक्ती की ज़रूरत वास्ते तै करने रास्ते के बयान की लेकिन वह उपासना उन्हों ने रास्ते के मुक़ामों के धनी और मालिकों की क़ायम रक्खी, पर जो कि उन सब का अभाव होता देखा, इस बास्ते अपने मत और उपदेश में प्रेमाभक्ती की मुख्यता नहीं की और ज्ञान को मुख्य ठहराया, यानी बग़ैर ज्ञान के मुक्ती का प्राप्त होना सही नहीं ठहराया। और ज्ञान से मतलब यह है, कि अभ्यासी जो भक्ती करके ईश्वर या ब्रह्म के मुक़ाम तक पहुंचा है वहां न ठहरे और ब्रह्म या ईश्वर के लक्षस्वरूप में जो अरूप और

निराकार है मिलकर अपने आपे को उसमें गुम् कर दे ताकि फिर जनम न होवे, और परलै और महा परलै की चोट से बच जावे, क्योंकि ईश्वर और ब्रह्म के लोक का परलै और महा परलै में अभाव हो जाता है ॥

१५—संतों ने जो प्रेमाभक्ती की शुरू से आख़िर तक मुख्यता करी, उसका सबब यह है, कि उनका भगवंत सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल हमेशा क़ायम है, और किसी क़िसम की परलै का असर दयाल देश यानी पहिले दरजे में नहीं पहुंचता है ॥

१६—संत भी अपने प्रीतम कुल्ल मालिक से जब चाहें जब मिलकर एक हो सक्ते हैं, और फिर जब चाहें जब जुदा होकर दर्शनों का आनंद लेते हैं—इसको भेद भक्ती और अभेद भक्ती कहते हैं, लेकिन जोगी और जोगीश्वर जिस पद में समाये, उस्से फिर न्यारे नहीं हो सक्के, जब तक कि वक़्त उत्थान यानी फिर जनमने का न आवे ॥

१७—उत्तम जीव यानी प्रेमी सुरतों से संत सतगुरु फ़रमाते हैं, कि उनको कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत करनी चाहिये, यानी जिस क़दर कि उनकी प्रीत संसार और

कुटुम्ब परिवार और धन माल वग़ैरे में है उस्से कुछ ज़्यादा मालिक के चरनों में होना चाहिये, तब रास्ता सुखाला और तेज़ चलेगा। यानी जो मालिक की प्रीत का पल्ला, बनिस्पत दुनिया की प्रीत के पल्ले के कुछ भारी होगा, तब कोई बिघन मन और माया और काल वग़ैरे का उनके अभ्यास में ख़लल नहीं डालेगा, और अभ्यास भी सहज बनेगा। इसी को गुरुमुखता कहते हैं, और गुरुमुख को कोई रोक और अटका नहीं सक्ता ॥

१८—जो उत्तम जीवों की बिशेष प्रीत चरनों में होगी, तब यह बात ज़ाहिर होगी कि उन्होंने सच्चे मालिक की कुछ पहिचान करी, और उसके चरनों का निश्चय धारा। और फिर कुल्ल मालिक उन पर दया भी सब से ज़्यादा, और उनकी सम्हाल और रक्षा भी ज़्यादा करेंगे, और उनकी सफ़ाई भी जल्द होगी, और रास्ता भी जल्द तै होगा ॥

१९—मध्यम जीवों की तीन क़िसमें हैं—एक तो वे जो भोग बिलास और सामान दुनिया का ज़्यादा या बढ़ के दरजे का, और अर्से तक क़ायम रहनेवाला चाहते हैं, और इस वास्ते स्वर्ग या बैकुंठ या औतारों और देवताओं के लोक का बासा चाहते हैं, और जो

कार्रवाई कि इस मतलब के हासिल होने के वास्ते मुक़र्रर है, उसको शौक़ के साथ करते हैं–दूसरे वे जीव जो ईश्वर या ब्रह्म के लोक में पहुंचने और अपने भगवंत के सन्मुख रहने की अभिलाषा करके भक्ती, या इधर से बैराग अंग लेकर अभ्यास करते हैं, पर ऐसे जीव बहुत कम हैं और इस क़िस्म का अभ्यास भी नायाब जौर बहुत कठिन है, और उसका साधन इस जुग में बनना मुश्किल बल्कि नामुमकिन है, सिर्फ़ संतों का तरीका अभ्यास का जीवों से बन सक्ता है। तीसरे वे जीव जो कि ईश्वर और ब्रह्म के स्वरूप और लोक का परलै महा परलै में अभाव देखकर उसके अरूप में समाने का जतन करते हैं–लेकिन वह जतन भी जैसा कि ऊपर कहा गया निहायत कठिन है, और इस ज़माने में दुरुस्ती से बन नहीं सक्ता। यह लोग पहिले ईश्वर या ब्रह्म की उपासना या भक्ती करके स्वरूप के मुक़ाम तक पहुंचते हैं, और फिर उसके लक्ष चेतन्य यानी अरूप में समाते हैं, और इसी का नाम ज्ञान है ॥

२०—इन तीनों क़िस्म के जीवों का पूरा और सच्चा उद्धार नहीं होता, यानी माया के घेर के पार नहीं जाते, क्योंकि इनको सच्चे मालिक और उसके धाम का

भेद नहीं मिला, और न इनके मन में उसकी प्रीत और प्रतीत आई। यह जीव पिछली टेक और पुराने वक़्त की जुक्तियों में बँधे रहते हैं, और संत सतगुरु और उनके उपदेश में इनको भाव बिलकुल नहीं आता। इन में से दूसरी और तीसरी क़िस्म के जीवों से, पुरानी करनी इस वक़्त में पूरे तौर पर नहीं बन पड़ेगी और इस वास्ते ईश्वर या ब्रह्म पद भी उनको हासिल नहीं होगा, जब तक कि संतों की सरन लेकर उनके जुगत की कमाई नहीं करेंगे ॥

२१—तीसरे दरजे के यानी निकृष्ट जीवों से, कोई परमार्थी कार्रवाई या जतन और जुगत, वास्ते प्राप्ती सुख और ऊंचे मुक़ाम के नहीं बन पड़ेगी। क्योंकि उनके मन में कुल्ल मालिक या ईश्वर और ब्रह्म वगैरा की प्रतीत साधारन होगी, और संसार की तरफ़ से चित्त हटाने की ताक़त उनकी नहीं है क्योंकि उसके भोग बिलास में वे गहरा सुख मानते हैं, और उन्हीं की चाह उठा कर दुनियां में मेहनत और मशक्क़त करते हैं, आइंदा का फ़िक्र करना ज़रूर नहीं समझते। यह जीव निपट संसारी हैं, और संतों के सतसंग के लायक़ मुतलक़ नहीं हैं, और वे बारम्बार दुनियां में अपनी करनी के मुवाफ़िक़ जनम धरते रहेंगे ॥

२२—जो जीव कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती और सरन में आये, वे मालिक के अपनाए हुये और महा प्यारे हैं, और दूसरे दरजे के जीवों पर भी ब्रह्म का ख़ास प्यार है, और बाक़ी जीवों पर आम तौर की दया है। इसी के मुवाफ़िक़ रामायण में भी बचन है ॥

॥ चौपाई ॥

भक्ति बिहीन बिरंच किन होई। सब जीवन सम प्रिय मम सोई ॥
भक्तिवंत जो नीचहु प्रानी। प्राण से अधिक सो प्रिय मम बानी ॥

२३—खुलासा इस बचन का यह है कि मालिक को भक्ती और दीनता प्यारी है, जो कोई उसके चरनों में सच्ची प्रीत और दीनता लावेगा, वही संत सतगुरु से मिल कर निज धाम में बासा पावेगा, और संत सतगुरु उसको मौज से आपही मिल जावेंगे और सबब ऐसी मौज का यह है, कि कुल्ल मालिक आप प्रेम का अथाह भंडार है, और जीव जो उसकी अंस है वह भी प्रेम स्वरूप है, और जिस धार के वसीले से कि उनका सूत मालिक के चरनों में लगा हुआ है, वह भी चेतन्य और प्रेम की धार है, फिर जो कोई प्रेम अंग लेकर चलेगा, वही मालिक के सन्मुख पहुंचेगा। बिना प्रेम के उस रास्ते में गुज़र नहीं हो सक्ता है ॥

२४—देखो कुल्ल रचना प्रेम से प्रकट हुई और प्रेम ही के आसरे ठहरी हुई है, और इसी तरह दुनियां में भी कुल्ल जीवों को, बल्कि जानवरों को भी प्रीत और दीनता और सेवा प्यारी है। जो कोई जिसके साथ इस तौर से बर्तावा करता है वह उसका प्यारा हो जाता है, और उसकी हर तरह से सहायता और मदद करता है। फिर जो कोई जिस पद की सच्चे मन से भक्ती और सेवा करेगा, वह एक दिन उस पद में पहुंचेगा, जो भेदी से उस पद का पता और निशान और रास्ते का भेद और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, अपने घट में चलना शुरू करेगा। लेकिन सच्चे और कुल्ल मालिक का धाम उसी को मिलेगा, जो संत सतगुरु का सतसंग करके और उपदेश लेकर, सुरत शब्द मारग का अभ्यास करेगा, यानी शब्द के आसरे सुरत को अपने घट में निज धाम की तरफ़ चढ़ावेगा। और मालूम होवे कि घट में रास्ता चाहे किसी स्थान तक का होवे सिर्फ़ संतों की जुगत की कमाई से तै होवेगा, और कोई तरकीब से जो कोई इस समय में चलना चाहे, तो रास्ता नहीं खुलेगा और चाल नहीं चलेगी ॥

२५—जो भक्ती के क़ायदे हर जगह इकसां हैं, चाहे

जिसकी जो कोई करे, इस वास्ते हर एक को मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले तहक़ीक़ करे कि कौन सच्चा और कुल्ल मालिक है, तब उसकी भक्ती में क़दम रक्खे, फिर उसको जितने पद रास्ते के हैं सब मिल जावेंगे, और आखिर में धुर धाम में बासा पावेगा। लेकिन कुल्ल मालिक का भेद सिर्फ़ संत सतगुरु, या उनके प्रेमी और अभ्यासी भक्त से मालूम हो सक्ता है, सो जिसके हिरदे में सच्चा शौक़ कुल्ल मालिक के दर्शन का है, उसको संत सतगुरु अपनी मेहर से आप मिल जावेंगे, यानी उसका संजोग अपने चरनों में लगावेंगे और उसको उपदेश देकर अपनी दया से एक दिन कुल्ल मालिक के देश में पहुंचावेंगे ॥

बचन—३६

सुरत का आंखों के मुक़ाम से अंतर में ऊपर की तरफ़ सुरत शब्द मारग के अभ्यास से चलाना और चढ़ाना वास्ते सच्चे और पूरे उद्धार के निहायत ज़रूर है ॥

१—मालूम होवे कि जीव की बैठक जाग्रत के समय यानी दुनियां और देह का कारोबार करने के वक़्त

मुख़्य करके आंखों में है। और इसी काले डइये और तिल को काजल की कोठरी कहा है, कि इस में बैठ कर कोई जीव साफ़ और पाक नहीं रह सक़ा, क्योंकि इस मुक़ाम पर मन और माया और इन्द्रियां और पांच दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार) का भारी ज़ोर और शोर है। चाहे कोई कैसा ही जतन करे, पर जब तक कि सुरत इस मुक़ाम से ऊपर की तरफ़ नहीं सरकेगी, तब तक बचाव और सफ़ाई मुमकिन नहीं है। बल्कि पूरी सफ़ाई और पूरा बचाव, काल और करम और मन और माया के हाथ से उस वक़्त होवेगा, जब कि सुरत सरक कर माया के घेर के पार पहुंच जावेगी, और वह मुक़ाम सुन्न यानी संतों का दसवां द्वार है ॥

२—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं, कि जो कोई इस काजल की कोठरी से निकलना चाहे, और काल के कष्ट और कलेश से निवृति चाहे, उसको चाहिये कि संतों की जुगती यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके अपनी सुरत को आंख के मुक़ाम से आहिस्ते २ चलाना और चढ़ाना निज घर की तरफ़ शुरू करे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन का बल लेकर, मन और माया को हटाता हुआ

चले, तो उनकी मेहर और दया से एक दिन माया की हद्द के पार और वहां से सत्तपुरुष राधास्वामी देश में पहुंच कर, अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

३—सुरत का आंखों के मुक़ाम से यकायक न्यारे होना आसान नहीं है, क्योंकि जब से जीव इस लोक में पैदा हुआ है, तब से अनेक बंधन जैसे माँ, बाप, स्त्री, पुत्र, कुटम्ब-परिवार, और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और धन और माल वग़ैरे २ के इसको बाहर लग गये हैं, और अंतर में देह के अंग २ में बंध गया है, सो जब तक यह सब बंधन संत सतगुरु का सतसंग और अंतर में शब्द का अभ्यास करके ढीले न होवेंगे, तब तक सुरत का ऊपर की तरफ़ को खिंचना आसानी के साथ मुमकिन नहीं है। जैसे ग़ुब्बारे को जब आसमान में उड़ाना चाहते हैं, पहिले हवा से भरते हैं, और जिस क़दर हवा भरती जाती है, वह ऊपर चढ़ने के वास्ते ज़ोर करता है, लेकिन जब तक कि उसकी डोरियां बंधी हुई हैं या उसको लोग पकड़े हुए हैं, तब तक ज़मीन को छोड़ करके चढ़ नहीं सक्ता। लेकिन जब वह डोरियां ढीली की जाती हैं, और फिर छोड़ दी जाती हैं, तब वह बेतकल्लुफ़ आसमान में अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ चढ़ता है। इसी तरह जब तक

सुरत के बंधन जो देह और दुनिया के साथ बंधे हुये हैं ढीले न होवेंगे, सुरत ऊंचे देश की तरफ़ बेतकल्लुफ़ चढ़ नहीं सक्ती। अलबत्ता जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीत, और सब प्रीतों से ज़बर हो जावे, तो आसानी से चढ़ाई मुमकिन है॥

४—मोटे बंधन जगत के संत सतगुरु के सतसंग और भक्ती से कट जावेंगे, और झीने यानी बारीक बंधन चित्त के शब्द के अभ्यास से काटे जावेंगे, तब सुरत और मन निर्मल और निरबंध होकर अपने घर की तरफ़ चलेंगे। यह काम जल्दी का नहीं है। जैसे बंधन आहिस्ते २ ढीले होते और कटते जावेंगे, ऐसे ही आहिस्ते २ सुरत और मन ऊंचे देश की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे, और एक दिन राधास्वामी दयाल की दया और संत सतगुरु की मेहर से काम पूरा बन जावेगा॥

५—जिस क़दर बंधन जीव के दुनिया में हैं, और जिस क़दर चाहें भोग बिलास की जिसके मन में धरी हैं, उसी क़दर उसके सुरत और मन इस तरफ़ को झोका खाते हैं और तपन सहते हैं। क्योंकि दुनिया के कुल्ल कामों में थोड़ी बहुत तपन पैदा होती है, पर दुनियादारों को वह तपन सुखदाई मालूम होती है,

लेकिन अभ्यासियों की अंतर मुख कार्रवाई में बिघन डालती है। इस वास्ते परमार्थी जीव को होशियार रहना चाहिये, कि नये बंधन न बढ़ावे, और संसार में फैलाने और भरमाने वाली तरंगें न उठावे ॥

६—कुल्ल काम देह और संसार के बग़ैर तपन यानी रगड़े और गरमी के जारी नहीं हो सक्ते, और असली शीतलता रूहानी देश में है, या रूह और शब्द की धार में। सो, जो कोई अपने अंतर में उस धार से मिलने का थोड़ा बहुत जतन करेगा, वही थोड़ा बहुत शीतल होवेगा, और तपन की भी ख़बर उसी को पड़ेगी ॥

७—जैसे बिजली सब जगह और ख़ास करके बादल में मौजूद है, लेकिन जब तक प्रघट न होवे, तब तक रोशनी या कोई और कार्रवाई उसकी धार की प्रघट और जारी नहीं हो सक्ती, इसी तरह निर्मल चेतन्य शब्द स्वरूप से घट २ में मौजूद है लेकिन जब तक अभ्यास करके प्रघट न होवे, तब तक उसके नूर और प्रकाश और आनंद और शीतलता का असर, अपने अंतर में मालूम नहीं हो सक्ता, और न उसकी क़दर और महिमां समझ में आसक्ती है। इस वास्ते शब्द के प्रघट करने में जिस क़दर मेहनत और कोशिश की जावे वह मुनासिब और ज़रूरी है ॥

८—जो कि यह कार्रवाई बग़ैर सतसंग और दया संत सतगुरु के जारी नहीं हो सक्ती, इस वास्ते मुनासिब है, कि सब में पहिले खोज संत सतगुरु और उनकी संगत का किया जावे ॥

९—जब २ सच्चे परमार्थी यानी प्रेमी जीव ज़्यादा इस लोक में जमा हो जाते हैं, तब संत सतगुरु भी वास्ते उनकी सम्हाल, और बढ़ाने प्रेमाभक्ती और अंतर अभ्यास के, ज़रूर इस लोक में आते हैं, और आम तौर पर सतसंग जारी फ़रमाते हैं, और प्रेमियों का संजोग अपने साथ आप अपनी मौज से लगाते हैं, यानी उनको कुछ दिक़्क़त ढूंढ़ने और तलाश करने की नहीं पड़ती है ॥

१०—जब प्रेमी जीव संत सतगुरु के सन्मुख या उनकी संगत में जाता है, तब बचन सुनते ही फ़ौरन उसके हिरदे में, प्रीत उनके चरनों की और भी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सुरत शब्द मारग की पैदा होती है, और उपदेश लेकर वह अभ्यास में लग जाता है, और थोड़ा बहुत रस अंतर में पाता है। यानीं जिस क़दर कमाई अगले जनम में कर आया है, उसी क़दर मन और सुरत उसके सिमट कर अंतर में चलते और चढ़ते हैं, और आइंदा को तरक़्क़ी का

रास्ता जारी हो जाता है, और प्रीत और प्रतीत और उमंग और सेवा दिन २ बढ़ती जाती है ॥

११—जो सतोगुनी जीव हैं, और वे संसार और उसके हाल को देखकर, और उस्से किसी क़दर उदास होकर, कुल्ल मालिक और उसके निज धाम का, वास्ते प्राप्ती अमर और पूरन आनंद के खोज करना चाहते हैं, उनका भी संत सतगुरु के सतसंग में मौज से संजोग लग जावेगा, और बचन महिमां और भेद के सुनकर मगन हो जावेंगे, और शौक़ के साथ उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग के अभ्यास में लग जावेंगे, और प्रेमी जन के संग सहज में भक्ती के अंगों में बर्ताव करेंगे, और जगत के जीवों का और भी अपनी कुल मर्यादा के तोड़ने का ख़ौफ मन में न लाकर, संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती में मरदाना क़दम रक्खेंगे, और बाहर और अंतर के सतसंग का थोड़ा बहुत रस पाकर उसकी दया और मेहर के बल से बढ़ाते जावेंगे ॥

१२—लेकिन विषई और निपट संसारी जीव संतों के सतसंग में नहीं आवेंगे, और जो किसी सबब से एक दो दिन के वास्ते आ भी गये तो ठहरेंगे नहीं, बल्कि बाहर निकल कर अपनी नादानी और कमफ़हमी से

निंदा करेंगे। ऐसे जीवों के संग से प्रेमी परमार्थियों को हमेशा बचते रहना चाहिये, और उनको अपने परमार्थ और भक्ती की कार्रवाई में बिघन कारक समझ कर, उनसे नाता मुहब्बत का ढीला कर देना चाहिये ॥

१३—खुलासा यह है कि जो अमर देश और परम आनंद की प्राप्ती चाहता है, और दुख सुख और जन्म मरन और कष्ट और कलेश के चक्कर से कतई बचना चाहता है, उसको लाज़िम और ज़रूर है, कि अपने सुरत और मन को निज घर की तरफ़ आहिस्ते २ चढ़ाना शुरू करे, और यह चढ़ाई सिर्फ़ संतों के जुगत की कमाई से मुमकिन है। और कोई जतन धुरधाम में पहुंचने का सिवाय सुरत शब्द मारग के रचा नहीं गया। और संतों की मेहर और दया संग लेनी चाहिये क्योंकि बग़ैर इस के अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगा ॥

बचन-३७

दाता से दाता ही को मांगे और दात का आशिक़ न हो जावे, सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दात मांगे ॥

१—कुल्ल जीव दुनिया में दुनिया के सामान के प्राप्ती के लिये मेहनत और मशक़्क़त कर रहे हैं, और उसके मिलने पर मगन हो जाते हैं, यानी जिस किसी के

पास दुनियां के भोग विलास और कुटम्ब परिवार मौजूद हैं, वह अपने तईं बड़भागी और सुखी समझता है ॥

२—कोई २ जीव जो आइंदा की हालत का बाद मरने के थोड़ा बहुत यक़ीन करते हैं वे स्वर्ग और बैकुंठ या बहिश्त के सुखों की चाह उठाकर वहां बासा पाने के वास्ते जतन करते हैं। लेकिन वहां हमेशा रहना नहीं हो सक्ता है, क्योंकि वहां के बासियों की भी उमर की तादाद मुक़र्रर है, बाद उसके गुज़रने के फिर जन्मेंगे और नई देह नीचे ऊँचे देश में अपनी करनी के मुवाफ़िक़ धारन करेंगे ॥

३—कोई जीव बाद मरने के इसी लोक में वापस आकर सुख भोगने के इरादे से जतन करते हैं, और ज़ाहिर है कि इस लोक में भी हमेशा कोई नहीं रह सक्ता। जिस क़दर यहां की उमर है उसी अर्से तक सुख दुख का भोग कर सक्ता है। लेकिन उन लोगों को यह देह और देश ऐसा प्यारा लगता है, कि वह बारम्बार इसी लोक में जनम लेना चाहते हैं ॥

४—बाज़े जीव अवतारों या देवताओं की भक्ती इस नज़र से करते हैं, कि उनके लोक में बासा पावें लेकिन वह लोक भी हमेशा क़ायम नहीं रहते, और न वहां

के बासी हमेशा ठहर सक्के हैं, अलबत्ता उमर बहुत बड़ी पा सक्के हैं ॥

५—थोड़े जीव मुक्ती की प्राप्ती के वास्ते ईश्वर की भक्ती करते हैं, और मुक्ती से मतलब यह है, कि या तो ईश्वर के लोक में बासा पावें, या उसके नज़दीक रहें, या उसका सा रूप उनका भी हो जावे, या उसकी ज़ात यानी लक्ष स्वरूप में जो अरूप और निराकार है मिल जावें। इन जीवों का दरजा और सभी से जिनका ज़िकर ऊपर किया गया बड़ा है लेकिन ईश्वर के लोक का भी प्रलय या महाप्रलय में अभाव हो जाता है, और उस वक़्त उन जीवों का भी सिमटाव हो जावेगा, और फिर रचना में आवेंगे ॥

६—मालूम होवे कि यह सब लोक और भी अलोक पद माया की हद्द में हैं, हरचंद ब्रहमान्डी यानी ईश्वरी माया निहायत सूक्षम और शुद्ध है, लेकिन जो रचना उसके घेर में है, वह हमेशा एक रस क़ायम नहीं रहती। इस सबब से संतों ने फ़रमाया है, कि जब तक जीव दयाल देश में (जहाँ माया का नाम और निशान भी नहीं है) न पहुंचेगा, तब तक उसका सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा, और न वह अमर आनंद को प्राप्त हो सक्का है ॥

७—संतों के भगवंत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल हैं। जो कोई उनकी भक्ती करेगा, वह संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर, और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर आहिस्ते २ रास्ता तै करके, एक दिन सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में (जहां माया मुतलक़ नहीं है) पहुंचेगा और तब सच्चा निःचिन्त होकर परमधाम में विश्राम पावेगा, और अमर आनंद को प्राप्त होगा ॥

८—इस पद का भेद और उसके रास्ते और मंजिलों का हाल तफ़सील के साथ, सिर्फ़ संत अथवा राधास्वामी मत में वर्णन किया है, और किसी मत में जो दुनियां में जारी हैं, इस पद का ज़िकर भी नहीं है। इस सबब से जो जीव संत सरन में आवेंगे, वेही अपने निज घर और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का भेद पावेंगे, और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके और एक दिन रास्ता तै करके वहां पहुंचेंगे। बग़ैर संत सतगुरु की दया और मदद के, उस धाम में कोई नहीं जा सक्ता है, और न कुल्ल मालिक का भेद पा सक्ता है ॥

९—अब संत दया करके जीवों को समझाते हैं, कि जिस क़दर रचना दयाल देश के नीचे और माया के

घेर में है, वह सब दात में दाख़िल है, जो कोई वहाँ का सामान और बासा चाहेगा, वह दात में अटका रहेगा, और सच्चे दाता से उसका मेल नहीं होगा। इस वास्ते जो जीव कि अपना सच्चा उद्धार चाहते हैं, उनको मुनासिब है, कि सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचने का इरादा दृढ़ करके, सुरत शब्द मारग का अभ्यास शुरू करें, तब उनका कारज दुरुस्त बनेगा ॥

१०—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से उन्हीं को मांगना चाहिये, या यह कि उनके चरनों का गहरा प्रेम जागे। तब वह संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ सहज में रास्ता तै करके, एक दिन संत सतगुरु की दया से राधास्वामी धाम में पहुंच जावेगा ॥

११—मालूम होवे कि दात के चाहने वाले दात के आशिक़ हैं। दाता से प्रीत उनकी मतलब के वास्ते है, जब मतलब पूरा हो गया यानी दात मिल गई, तब वह प्रीत हलकी और ढीली पड़ जाती है, यानी फिर दाता से इस क़दर सरोकार नहीं रहता। लेकिन कभी २ कोई दात के चाहने वालों में से दया और बख़्शिश पाकर और दाता के आशिक़ों का संग करके आप भी उनमें मिल जाता है, और रफ़्ते २ इश्क़ पैदा

करके सच्चा प्रेमी और आशिक़ बन जाता है। बिना संत सतगुरु या प्रेमी जन के संग के यह बात हासिल नहीं हो सक्ती। इस वास्ते वही जीव बड़ भागी है, जो संत सतगुरु के वसीले से दात चाहे, और इस मतलब से उन की सेवा और सतसंग करना शुरू करे तो शायद उनकी मेहर की नज़र से बचन सुनकर उसकी चाह बदल जावे, और बजाय दात के उनसे दाताही को मांगे ॥

बचन-३८

वर्णन सबब डिगमिग हो जाने जीव का मालिक की भक्ती में और ढीले हो जाना सरन में और जतन वास्ते दूर करने उसके ॥

१—संत फ़रमाते हैं कि परमार्थी जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपनी प्रीत और प्रतीत चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ाते रहें, और सरन को मज़बूत करते रहें और अपना अभ्यास विरह या प्रेम अंग लेकर नित्त करते रहें ॥

२—इस कार्रवाई में अक्सर बिघन पड़ जाते हैं,

यानी कभी २ प्रीत और प्रतीत रूखी फीको और भक्ती डिगमिग हो जाती है, और कभी सरन ढीली हो जाती है ॥

३—सबब इन बिघनों के यह हैं: (१) परमार्थी जीवों का मन कभी अपने हाल और चाल की तरफ़ नज़र करके, यानी अपने विकार और कसरों की देख कर, सुस्त और ढीला और निराश हो जाता है, (२) कभी दुनिया की चिंता और फ़िक्र या भोगों की तरंगों में वक़्त अभ्यास के बह जाता है, (३) कभी मालिक की क़ुदरत की अचरजी कार्यवाई यानी वारदातें देखकर या उनका ख़्याल करके डर जाता है, और उसका भेद और असली सबब न दरियाफ़्त होने से, तरह २ के वहम और संदेह उठाकर, अपनी प्रीत और प्रतीत में ख़लल डालता है, जैसे अकाल और मरी और वबा और तूफ़ान पानी और हवा का और भुचाल और लड़ाई और तरह २ के नुक़सान जान और माल वगैरा के ॥

४—पहिले सबब की निसबत यह कहा जाता है, कि परमार्थी जीवों को ज़रूर चाहिये कि अपने मन और इंद्रियों की चाल को निरखते रहें, और जहाँ तक मुमकिन होवे, उनको फ़िज़ूल और ना मुनासिब

और नाजायज़ ख़्याल उठाने, और उन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने से रोकते रहें। और जब कभी मन या इंद्री उनकी कहन न माने और क़ाबू में न आवें, तब चरनों में संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के फ़रियाद और प्रार्थना करें, और उनकी दया का भरोसा रख कर ज़्यादा न घबरावें। बल्कि सरन का आसरा लेकर ऐसा यक़ीन करें, कि संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल एक दिन ज़रूर अपनी दया का बल देकर मन और इंद्रियों पर क़ाबू दिलावेंगे, और अपनी हालत पर थोड़ा शरमा कर ज़्यादा दीनता के साथ अभ्यास में मदद मांगें और सरन को ज़्यादा मज़बूत करें, और किसी तरह की निराशा चित्त में न लावें यानी ऐसी समझ न धारें कि जब तक मन और इन्द्री क़ाबू में नहीं आवेंगे उद्धार नहीं होगा। क्योंकि संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल समर्थ हैं, और वे अपनी मेहर से सुरत को सब विघनों से बचा कर, सुख स्थान में पहुंचा सक्ते हैं, और मन और इन्द्रियों को भी एक छिन में मोड़ सक्ते हैं। इस वास्ते चाहिये कि अपनी कोशिश जिस क़दर मुमकिन होवे वास्ते सम्हाल मन और इंद्रियों के करते रहें, लेकिन भरोसा दया के बल का रक्खें ॥

५—दूसरे सबब की निसबत यह बयान किया जाता है, कि परमार्थी जीवों को मुनासिब है, कि दुनियां और उसके भोगों की इच्छा ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उठावें—और फ़िज़ूल तरंगें रोकते रहें यानी जिस क़दर कि कार्यवाई निसबत अपने रोज़गार या पेशे या घर बार के कारोबार और बिरादरी के व्यौहार वगैरे के ज़रूरी है उसकी बाबत ख़्याल या सोच विचार या जतन करने में, जिस क़दर ज़रूरी और मुनासिब मालूम होवे कोई हर्ज़ नहीं है। लेकिन फ़िज़ूल ख़्वाहिश दुनिया के मान बड़ाई और भोगों की उठाना या किसी से झगड़ा बखेड़ा करना, या ख़फ़ीफ़ कामों में बहुत तवज्जै और वक़्त ख़र्च करना, या दूसरों के झगड़ों और मुआमलों में दस्तअंदाज़ी करना, हमेशा बचाना चाहिए। ताकि अपना मन वक़्त कार्रवाई परमार्थ के बेहूदा और फ़िज़ूल तरंगें न उठावे॥

जो कोई अपने अभ्यास की हालत को जांचता रहता है, उसको मालूम पड़ेगा कि दुनियां के ख़्यालात और तरंगें किस क़दर बिघन डालती हैं, और असली परमार्थ की कार्यवाई से रोकती हैं—तब वह आप होशियारी के साथ कार्यवाई करेगा, और जहां तक मुमकिन होगा दुनिया के फ़िजूल और बे फ़ायदे ख्यालों से बचता रहेगा॥

जिस क़दर चित में संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम और अनुराग जागता जावेगा, उसी क़दर संसार और उसके कारोबार से चित्त उदास होता जावेगा, और अंतरी बैराग मन में पैदा होता जावेगा, और तबही अभ्यास थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बनेगा ॥

६—तीसरे सबब को निसबत सिर्फ़ इस क़दर बयान हो सक्ता है, कि जीवों की समझ ओछी और महदूद है—और इस सबब से क़ुदरत की कार्यवाई को जैसा चाहिये नहीं समझ सक्ते। इसके वास्ते नज़र गहरी और समझ पूरी दरकार है और वह बग़ैर मन और सुरत की चढ़ाई के ऊँचे देश में हासिल नहीं हो सक्ती। इस वास्ते परमार्थी जीवों को, अपने मालिक की क़ुदरत में दख़ल देना, कि फ़लाना काम या मुसीबत आसमानी या ज़मीनी, क्यों और किस वास्ते और किस सबब से वाक़ै हुई, नहीं चाहिये। अलबत्ते सख़्ती और तकलीफ़ और नुक़सान जीवों का देखकर मन डरता है, और घबराता है और दुखी भी होता है, पर हुक्म और मौज मालिक की समझ कर, ऐसे वाक़यात पर अपने चित्त को चरनों की तरफ़ से हटाना, या किसी तरह का अभाव लाना, या मन में

शक पैदा करना नहीं चाहिये बल्कि ख़ौफ़ खाकर अपने अभ्यास में, ज़्यादा होशियारी और सरन को ज़्यादा मज़बूत और दया का भरोसा पक्का करना चाहिये। क्योंकि जो कुछ हालत सख़्ती या नरमी की जीवों पर दुनियां में गुज़र रही है, वह उनके पिछले अगले और हाल के करमों का फल है, जिसका भेद कोई नहीं जानता है—सिर्फ़ उन करमों के फल को भोगते हुए जीवों को देखता है ॥

असल हाल यह है कि इस दुनियाँ में सच्चा आराम और चैन कहीं नहीं है, और जो थोड़ा बहुत दिखलाई देता है, वह भी ठहराऊ नहीं है, और जल्द दुख के साथ बदल जाता है। सच्चा सुख संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में है—जिस किसी को भाग से सतसंग और चरनों में थोड़ी बहुत लगन पैदा हो जावे, उसका अलबत्ते हर एक क़िस्म की चिन्ता और तकलीफ़ और दुख से किसी क़दर बचाव हो सक्ता है—और चरनों का रस और आनंद लेकर, और सतसंग के वचनों को विचार करके थोड़ा बहुत अचिंत और बेफ़िक्र और अपने अंतर में मगन रह सक्ता है। और जो संसारियों और करमियों की हालत देख कर उसी के ख़्यालों में अपने चित्त को

फँसाता है वह अक्सर दुखी सुखी रहेगा—और कभी संत सतगुरू और राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव और कभी अभाव लाकर, अपनी भक्ती और सरन को डावांडोल रक्खेगा, और अपने जीव के कारज के बनाव में बिघन डालता रहेगा ॥

मुनासिब तो यह है कि हर हाल में चरनों की तरफ़ ध्यान लगाता रहे, और जब २ किसी क़िसम की चिन्ता और फ़िक्र, या तकलीफ़ अपनी या पराई सतावे—तब थोड़ा ज़ोर देकर चित्त को चरनों में लगावे, तो वह किसी क़दर हलक़ी हो जावेगी, और अंतर में थोड़ा बहुत आराम मिलेगा ॥

७—सच्चे परमार्थी को जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरू की सरन में आया है, लाज़िम और मुनासिब है, कि अपने मालिक यानी स्वामी और प्रीतम की मौज के साथ, जहां तक मुमकिन होवे मुवाफ़क़त करे। क्योंकि जब मालिक सर्वसमर्थ है, और सब से बड़ा और सब के ऊपर है, तो फिर उसकी मौज में कौन दख़ल दे सक्ता है—जो मुवाफ़क़त करेगा, तो भक्ती और सरन क़ायम रहेगी, और जो ना मुवाफ़क़त करेगा, तो भक्ती और सरन डिगमिग हो जावेगी ॥

८—सच्चे परमार्थी को विचार करना चाहिये कि दुनियां में सख़्ती और नरमी और मुसीबत और आराम की हालत सब जीवों पर गुज़र रही है-और सब चाहे परमार्थी हैं या संसारी उस हालत की जब-रन् या समझ बूझ के साथ बरदाश्त कर रहे हैं, यानी दुनियादार रो पीट कर और समझदार ताम्मुल के साथ सबर और बरदाश्त करते हैं। और भक्त जन अपके मालिक और प्यारे की मौज समझ कर, उस को भक्ती यानी प्रीत के साथ क़बूल और मंज़ूर करते हैं-फिर जबकि मौज में किसी को दख़ल नहीं है, और वह जैसे बने तैसे माननी पड़ेगी तब अपनी भक्ती को क़ायम रखने के वास्ते जब २ जैसी मौज होवे, उसको साथ शुकर या तसलीम[1] या रज़ा के मंज़ूर करना चाहिये ॥

९—सिवाय इसके भक्ती मारग में हुकम है, कि प्रेमी अपने प्रीतम के चरनों में तन मन धन अरपन करे, और उसकी रज़ामंदी और प्रसन्नता को हर काम में मुक़द्दम रक्खे। फिर जब यह क़ायदा भक्ती का मुक़र्रर हुआ है, तब विचारो कि इसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना मुनासिब है, या उसके बरख़िलाफ़,

१—क़बूल करना।

और अपनी भक्ती को क़ायम रखना और बढ़ाना मुनासिब है, कि घटाना और उसमें खलल डालना। खुलासा यह कि प्रेमी को हर हाल और हर सूरत में अपने प्रीतम की मौज और हुक्म के साथ जैसे बने तैसे, मुवाफ़क़त करना चाहिये ॥

१०—यह सही है कि जीव बहुत कमज़ोर और निर्बल हैं, और बसबब अर्से से दुनियाँ में फँसे रहने और बर्ताव करने के, उसकी मुहब्बत बहुत मज़बूत हो गई है, और उसके सामान को छोड़ना, या उससे दिल का हटाना, या उसकी हानि लाभ में दुखी सुखी न होना बहुत मुशकिल हो गया है। लेकिन सतगुरु और सतसंग की मदद, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से भक्ती के क़ायदों के मुवाफ़िक़ बर्ताव करना आहिस्ते २ आसान हो सक़ा है और उसमें किसी क़िसम की दिक़्क़त व तक़लीफ़ नहीं होगी, यानी प्रेमी जन अंतर में भक्ती अंग में बर्ताव करने से शान्ती और ताक़त पावेंगे, और बाहर से (जो वे ग्रहस्त में रहते हैं) ग्रहस्तियों के साथ जैसा उनका व्यवहार है बर्ताव करेंगे। यह ताक़त उनको संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से (जिनकी सरन में वे आये हैं) आहिस्ते २ मिलेगी। क्योंकि यह काम

जल्दी का नहीं है, यानी जैसे जीव संसार में कितने ही अर्से में संसारियों का संग कर के फँसा है, इसी तरह संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग कर के कुछ अर्से में छूटेगा ॥

११—हर एक परमार्थी को जो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की सरन में आया है लाज़िम और मुनासिब है, कि ऊपर की लिखी हुई हिदायत के मुवाफ़िक़, जहां तक बन सके कार्यवाई शुरू करे, और दया का आसरा लेकर उसको बढ़ाता जावे, ताकि भक्ती की तरक़्क़ी होती जावे। अभ्यास के वक़्त ख़ास कर और दूसरे वक़्तों में आम तौर पर, अपनी समझ-बूझ और ख़्यालों को, और भी अपने मन और इंद्रियों की चाल को, ऊपर की हिदायत के मुवाफ़िक़ सम्हालता रहे, तो कोई दिन में उसका घाट बदल जावेगा, यानी संसारी रीत के मुवाफ़िक़ बर्तावा दूर होकर भक्ती की रीत और क़ायदे के साथ, उसकी चाल ढाल और समझ बूझ बदलती जावेगी, और गुरुमुखता का दरजा हासिल होगा, और इस तरह एक दिन अपने प्रीतम का प्यारा हो जावेगा ॥

———

बचन-३९

मालिक कहना है कि जो चीज़ मेरे धाम में नहीं आ सक्ती और नहीं ठहर सक्ती उसको और उसके ख़्याल और याद को छोड़ कर आओ तब मेरे से मेला होगा, और जो चीज़ कि मेरे यहां नहीं है वह लेकर आओ, और जो चीज़ कि मुझ को अधिक प्यारी है उसके आसरे आओ ॥

१—मालूम होवे कि जैसे सुरत का उतार नीचे के देश में होता आया, तैसे ही बसबब मिलौनी माया और पांचों तत्व और तीनों गुन के अनेक धारें पैदा होती गईं, और विचित्र रचना भी चैतन्य और जड़ पदार्थों की बढ़ती गई और सुरत मन और इंद्रियों के वसीले से उनके साथ लिपटती और बंधती और फिर उसी नीचे की रचना में फँसतीं गई ॥

२—अब इस क़दर बंधन और मज़बूती के साथ फँसाव, सुरत का देह और दुनियां यानी कुटुम्ब परिवार और भोगों और अनेक पदार्थों में हो गया है,

कि उनके छोड़ने का इरादा करने में जानसी निकलती है, और चाहे जिस क़दर उनके सबब से दुख और तकलीफ़ भी पावे, फिर भी उनका संग छोड़ना मंज़ूर नहीं करता ॥

३—सिवाय ज़ाहरी संग के इस क़दर प्रीत और बंधन साथ दुनिया और उसके पदार्थों के हो गया है, कि अंतर में हर वक़्त ख़्याल और फ़िकर उनका थोड़ा बहुत मुवाफ़िक़ हर एक की प्रीत के बना रहता है, और उन्हीं की गुनावन और याद उठा करती है। यहां तक कि जाग्रत अवस्था में अंतर और बाहर वही करतूत मन किया करता है, बल्कि स्वप्न अवस्था में भी इसी क़िसम के ख़्याल पैदा होते हैं, और वैसी ही करतूत थोड़ी या बहुत जारी रहती है ॥

४—ज़ाहिर है कि जो रचना स्थूल या निहायत स्थूल है, वह उलट कर सूक्षम रचना के मुक़ाम तक नहीं पहुंच सक्ती, यानी अपनी ही हद्द में रहेगी। इसी तरह जो धारें और क़ुव्वतें कि नीचे के देश में, मन और अंतःकर्न और इंद्रियों से पैदा हुईं, वह भी अपने हद्द और देश में कार्रवाई करती हैं, और उलट कर ऊंचे देश में नहीं पहुँच सक्तीं ॥

५—संत फ़रमाते हैं कि पिंड देश के स्वभाव और

ख़्वाहशें और क़ुव्वतें इसी देश में छोड़ना चाहिये, यह ऊँचे देश में नहीं जा सक्ती हैं और न वहाँ इनके ठहरने की गुंजायश है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को जो ऊँचे देश में चढ़ कर अपने सच्चे मालिक से मिलना चाहता है मुनासिब और लाज़िम है कि इधर की रचना की मुहब्बत और चाह मन से जिस क़दर मुमकिन होवे ढीली और दूर करे, और उसके ख़्याल और याद को बिसरावे, तब मन और सुरत की चढ़ाई ऊँचे देश में मुमकिन होगी ॥

६—इसमें कुछ शक नहीं कि किसी को किसी चीज़ में ज़ाहर में बांधा नहीं है, और जब वह चाहे उससे अलहदा हो सक्ता है, यानी उसके संग को थोड़े बहुत अर्से के वास्ते छोड़ सक्ता है, पर उसका ख़्याल और याद मन में बसी रहती है, और जब तब फुरना यानी गुनावन पैदा करती है, कि जिससे मन अंतर में चाहे जहां होवे, उसी का संग करता है, और उसी ख़्याल के सबब से दुख सुख का भी भोग थोड़ा बहुत करना पड़ता है ॥

७—संत फ़रमाते हैं कि ऐसे दुनिया के ख़्यालों को मन से हटाना और दूर करना चाहिये, और बजाय उसके मालिक के चरनों का ख़्याल, या उसका महा

पवित्र नाम, या सुंदर स्वरूप हिरदे में बसाना चाहिये, तब इस नीचे दरजे की रचना से छुटकारा होवेगा ॥

८—बाहर से कुटम्ब परवार और भोगों और पदार्थों में, मुवाफ़िक़ ज़रूरत के बर्ताव करने से इस क़दर हर्ज नहीं होवेगा, जो उनमें गहरी प्रीत और बंधन नहीं है। यह प्रीत और बंधन संग करके सबके मन में पैदा होता है, लेकिन सच्चे परमार्थी को सतसंग की समझ बूझ और संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर, उस प्रीत और बंधन को हलका और ढीला करना चाहिये ॥

९—जो कोई चित्त से सतसंग करेगा और बचन और बानी सुनकर बिचारेगा, उसको दुनिया और उसके सामान की हक़ीक़त और कैफ़ियत आप ही प्रघट मालूम होती जावेगी, यानी यह सब कारख़ाना एक धोखे की जगह नज़र आवेगा और अख़ीर में दुखदाई मालूम पड़ेगा। फिर उसका मन आप उसकी तरफ़ से हटता और सरकता जावेगा, और सच्चे मालिक के चरनों में जुड़ता जावेगा ॥

१०—इस कार्रवाई के वास्ते संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन का संग ज़रूर दरकार है, और जिसको भाग से ऐसा सतसंग मिल गया, उसको सच्चे का भेद और

महिमां मालूम होवेगी । और जिस तरकीब से कि सच्चे के चरनों में मेल पैदा होवे, और थोड़ा बहुत उसका रस और आनंद मिले, वह भी वक़्त लेने उपदेश के समझ में आवेगी, और फिर उसी के अभ्यास से दिन २ हालत भी थोड़ी बहुत बदलती जावेगी ॥

११—सच्चे सतसंग और सच्चे मालिक के दरबार में, दुनिया और उसके सामान या उसके ख़्याल और याद की गुंजायश नहीं है । इस वास्ते जो कोई वहां दख़ल चाहता है, उसको इन चीज़ों और उनके ख़्याल को छोड़ कर चलना चाहिये नहीं तो उसी देश में जहां की रचना में वह चीज़ें दाख़िल हैं अटका रहेगा, और फिर २ उलट कर उसी तरफ़ को झोका खावेगा, और ऊंचे देश की तरफ़ इस नामुनासिब भार और बोझे के सबब से न तो चल सकेगा और न वहां उसको ठहरना मिलेगा और जिस क़दर कार्रवाई परमार्थ की इन ख़्यालों को संग लेकर की जावेगी, वह मुफ़्त बरबाद जावेगी ॥

१२—मालूम होवे कि जगत और उसके बंधनों और सामान से न्यारे होना, आसान और जल्दी का काम नहीं है, क्योंकि दुनिया की प्रीत और बंधन भी एक अर्से में, दुनियादारों का संग करके, मज़बूत हुए हैं

और पके हैं। इसी तरह कुछ अर्से तक अंतर और बाहर सतसंग करके, यह बंधन आहिस्ते २ ढीले होवेंगे, और संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा ॥

१३—जो लोग कि बग़ैर लगाने खोज सच्चे मालिक के, और जोड़ने प्रीत के उसके चरन कंवल में घरवार और रोज़गार छोड़ कर भेषधारी बन गये, उनकी अक़्ल और नज़र दोनों मारी गईं यानी भेषधारी होने का इस क़दर अहंकार चित्त में समाया, कि अपने तईं जगत का बड़ा और पूज्य जानने लगे, और अपनी निहायत ओछी और मलीन हालत की ख़बर नहीं रही, फिर उसके सफ़ाई और दुरुस्ती का जतन कौन करे और किस्से पूछे। और बावजूदे कि जीवों को मरते हुए और दुख भोगते हुए हर रोज़ देखते हैं, पर अपनी मौत और दुख सुख के बचाव का फ़िक्र और सोच ज़रा भी मन में नहीं लाते। बल्कि जो कोई उनके चितावने का बचन कहे, या उनको शब्द के अंतर मुख अभ्यास की तरफ़ तवज्जह दिलावे, तो उसको मुतलक़ नहीं सुनते, और न किसी क़िस्म का अभ्यास करना मंज़ूर करते हैं, कि जिसका नतीजा यह होता है, कि बारम्बार चौरासी में भरमते हैं ॥

१४—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं, कि जो कोई जगत से न्यारा होना चाहे, और अपने सच्चे मालिक से मिल कर, उसके दर्शन का आनंद लेना चाहे, उसको मुनासिब है कि पहिले संतों के सतसंग में जावे, और चित्त देकर के बचन सुने और बिचारे, और उपदेश लेकर नित्त सुरत शब्द योग का अभ्यास करे, तब संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से, कुछ अर्से में इसको अपनी हालत के बदलते जाने की ख़बर पड़ेगी, और फिर जिस क़दर प्रेम उसका संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ता जावेगा, उसी क़दर यह माया और माया की रचना के घेर से न्यारा होकर राधास्वामी धाम की तरफ़ चलता और चढ़ता जावेगा, और रफ़्ते २ एक दिन अंतर में सब से जुदा होकर अपने सच्चे मालिक से उसके निज धाम में जा मिलेगा। बेफ़ायदा जल्दी करना इस काम में मुनासिब नहीं है। यह काम जब बनेगा तब संत सतगुरु की दया से आहिस्ते २ बनेगा, और तब मन और माया का संग और उनकी रचना के दुख सुख का चक्कर हमेशा को क़तई छूट जावेगा ॥

१५—जिस क़दर कार्रवाई परमार्थ की संतों ने जारी

फ़रमाई है, उस सब का मतलब जीव को मन और माया के संग और उनकी रचना के घेर से बचाकर, सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में पहुंचाने का है, ताकि जनम मरन के कष्ट और कलेश और देहियों के बंधनों से छूट कर परम आनंद को प्राप्त होवे ॥

१६—इस न्यारे हो जाने की दया और आनंद की हालत को वही शख़्स जान सक्ता है कि जिसकी सुरत जगत और माया के जाल से निकस कर और सब बंधनों को तोड़ कर, सुन्न और फिर सत्तलोक के मुक़ाम में पहुंच कर, सैर करती है। वही जीव महा बड़भागी है और वही महा दयापात्र है और वही परम भक्त है, और वही संतों के प्रताप से एक दिन संत गती को प्राप्त होता है ॥

१७—संतों ने फ़रमाया है कि मालिक को दीनता पसंद है। दीनता सच्ची ग़रज़ मंदी और अधीनता का नाम है। इस चीज़ की ज़रूरत कुल्ल परमार्थी जीवों को, जो अपने सच्चे मालिक से इस देश से चल कर और चढ़ कर मिलना चाहते हैं ज़्यादा से ज़्यादा है। जिस के हिरदे में दीनता और अधीनता, संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में नहीं है, उसको एक ज़र्रह परमार्थ नहीं मिल सक्ता ॥

१८—यह दीनता और अधीनता मालिक के दरबार में नहीं है, क्योंकि वह सब से बेपरवाह और अपने स्वरूप में आप मगन है, और वही परम आनंद और परम प्रेम और महा चेतन्यता का भंडार है। इस वास्ते संत कहते हैं, कि जो कोई कि दीनता और अधीनता (जो पदार्थ कि मालिक के दरबार में नहीं हैं) इधर से लेकर चलेगा, वही दरबार में दख़ल पावेगा, और उसी को सच्चे मालिक के दर्शनों का आनंद प्राप्त होवेगा ॥

१९—दीनता और अधीनता का स्वरूप यह है, कि मालिक के दर्शनों की सच्ची चाह रखता होवे और जो संत सतगुरु हुकम करें उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे। और जो कुछ कि मालिक करे, और जैसे वह रक्खे उसमें राज़ी रहे, यानी उसकी मौज के साथ मुवाफ़क़त करे। यह बात सच्चे और पूरे परमार्थी से ही बन आवेगी ॥

२०—संत फ़रमाते हैं कि सच्चे मालिक को प्रेम प्यारा है। जो कोई प्रेम अंग लेकर सेवा, सतसंग और अभ्यास अंतर और बाहर करेगा, उस पर मालिक की मेहर और दया ज़रूर आवेगी, और काम भी उसका सुखाला बनता जावेगा, और मन और माया भी उस पर अपना ज़ोर कम चलावेंगे ॥

२१—प्रेम की महिमां बहुत भारी है। जितने बिकार हैं वे सब प्रेम से बहुत जल्द दूर हो जाते हैं। और सतसंग में प्रेमी शख़्स बहुत जल्द रल मिल जाता है, और संत सतगुरु की दया और राधास्वामी दयाल की मेहर जल्द हासिल करता है, कि जिस्से कुल्ल काम उसका आसानी के साथ बनता चला जाता है॥

२२—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम का भंडार है, और कुल्ल जीव प्रेम स्वरूप हैं, और प्रेम से ही कुल्ल रचना प्रघट हुई, और प्रेम के ही आसरे ठहरी हुई है। जीवों को भी मुहब्बत करने वाला प्यारा लगता है, और मुहब्बत ही के वसीले से सब काम कर रहे हैं। इस वास्ते कुल्ल मालिक को भी प्रेम प्यारा है, और जो कोई प्रेम अंग लेकर उसकी तरफ़ चलता है, वह दया और मेहर से जल्द और आसानी के साथ मंज़िल पर पहुंच जाता है, और रास्ते के बिघन आहिस्ते २ सब दूर हो जाते हैं॥

२३—इस वास्ते सच्चे परमार्थी को चाहिये कि मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे। जो प्रीत कि बिना प्रतीत के है उसका ऐतबार नहीं हो सक्ता, लेकिन जो प्रतीत सहित है वह दिन २ सतसंग और अभ्यास करके बढ़ती जावेगी, और एक दिन प्रीतम

से मिला कर छोड़ेगी। सच्चे प्रेम के संग हमेशा कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की दया शामिल रहती है, और प्रेमी को हर काम में गुप्त और प्रघट मदद देती है, चाहे उसको मालूम पड़े या नहीं, और चाहे वक़्त पर उसकी समझ में आवे या नहीं, लेकिन रफ़्ते २ सब कामों की मसलहत और फ़ायदा सच्चे प्रेमी पर खुलता जावेगा, और अपने प्रीतम की मेहर और दया की प्रतीत बढ़ती जावेगी ॥

बचन-४०

सब रचना प्रेम से पैदा हुई और प्रेम से ही ठहरी हुई है, और प्रेम से ही चलना और दो का मिलना मुमकिन है–इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है, कि जहां जगत में अनेक से प्रीत कर रहे हैं, कुछ थोड़ी या बहुत मालिक के चरनों में भी प्रीत करें, तो जीव का गुज़ारा हो जावेगा ॥

१—कुल्ल रचना खैंच शक्ती यानी प्रेम से पैदा हुई और इसी शक्ती के आसरे ठहरी हुई है और कुल्ल कारोबार उसके जारी हैं ॥

२—कुल्ल रचना में सब बड़े और छोटे आपस में प्रीत कर रहे हैं, यानी एक दूसरे को खैंच रहा है और प्रीत या शौक़ या मुवाफ़क़त के सबब से कुल्ल कार्रवाई रचना और जीवों के कारोबार की जारी है ॥

३—हर एक जीव की प्रीत या मुहब्बत अनेक जगह तक़सीम हो रही है, यानी मन उसका ज़र्रे २ होकर अनेक जीवों और चीज़ों में बंध रहा है, और इन्हीं बंधनों के सबब से इस दुनिया में दुख सुख का भोग करता है ॥

४—बग़ैर स्वार्थ या मतलब के कोई किसी से प्रीत नहीं करता, चाहे वह मतलब धन की प्राप्ती का होवे या मन और इन्द्रियों के रस और भोग या मान और बड़ाई या जिसको ख़ास अपना समझा है उसके पालन और पोषन और रक्षा वग़ैरे का होवे, या अपने या दूसरे के तन के आराम का या दुख और कलेश के दूर करने का होवे ॥

५—दुनिया की प्रीत ठहराऊ नहीं है, और हमेशा बदलती रहती है, यानी उसमें कमी बेशी होती रहती है, क्योंकि दोनों प्रीत करनेवाला और जिसके साथ

प्रीत की जावे क़ायम नहीं रह सक़े और हर वक़्त और हर रोज़ उनकी हालत बदलती रहती है, यानी बढ़ाव और घटाव और एक दिन अभाव होने की तरफ़ उनका झुकाव रहता है। इस वास्ते इस प्रीत में सुखदाई और दुखदाई अंग दोनों हैं, बल्कि दुखदाई अंग ज़्यादा है ॥

६—जब कि कुल्ल जीव ज़मीनी रचना यानी बेशुमार आदमियों और चीज़ों से जिन २ से उनका काम निकलता है प्रीत कर रहे हैं, बल्कि आसमानी और आकाशी रचना से भी, जैसे सूरज और चांद और बाज़े तारे और हवा और मेघ और सरदी और गरमी वग़ैरे से भी ख़ास प्रीत रखते हैं, क्योंकि बग़ैर इनके जीवों का गुज़ारा इस दुनिया में नहीं हो सक़ा, तो फिर कुल्ल मालिक के चरनों में जिसके सबब से हर वक़्त रूह और जान की ताज़ा धार पिंड में उतर कर तमाम देह के अंग २ की कार्रवाई कर रही है और जिस मालिक की मौजूदगी की तमाम रचना गवाही दे रही है, सब से ज़्यादा प्रीत करना या इस क़दर न बन सके तो थोड़ी बहुत प्रीत करना हर एक जीव पर किस क़दर ज़रूर और लाज़िम और फ़र्ज़ है ॥

७—सब जीवों को प्रीत करने की आदत है, सो हर

एक शख़्स ख़ूब जानता है कि कैसे प्रीत की जाती है, और कैसे उसकी तरक़्क़ी हो सक्ती है। इस क़िस्म का बर्तावा हर एक जीव अपने निहायत प्यारे रिश्तेदार और दोस्तों और कम प्यारे और दूर के रिश्तेदार और मुलाक़ातियों से हर रोज़ बर्त रहा है, यानी अनेक दरजे की प्रीत दुनिया में कर रहा है और उसी दरजे के मुवाफ़िक़ हर एक से बर्ताव करता है ॥

८—प्रीत के वर्तावे की सूरत यह है, कि एक दूसरे से अक्सर या कभी २ मिलता रहता है, और आपस में मिलकर खाते पीते हैं, या एक दूसरे को तोहफ़े भेजते हैं और ठिक ब्यौहार और तीज त्यौहार पर ज़रूर याद करके अपने मुहब्बत वालों को बुलाते हैं और जो कोई रिश्तेदार या दोस्त ग़ैरहाज़िर होवे, यानी परदेस में होवे तो उसके लड़के बालों को खाने पीने में शामिल करते हैं, और उनके पास भाजी और तोहफ़े भेजते हैं, यह बर्तावा निशान और सबूत प्रीत का समझा जाता है ॥

९—जो कोई सच्चे मालिक के चरनों में किसी दरजे की प्रीत सच्चे मन से करेगा, उसका दिल बग़ैर ऊपर की क़िसम के थोड़ा बहुत बर्तावा करने के कभी नहीं मानेगा। लेकिन जो कि सच्चा और कुल्ल मालिक गुप्त

है, और परे से परे देश में उसका धाम है, इस वास्ते जो कोई उसके साथ अपनी प्रीत को ज़ाहिर करना चाहे वह उसके बाल बच्चों के साथ बर्ताव करे ॥

१०—मालिक के सच्चे प्रेमी और भक्त प्यारे बाल बच्चे हैं, इनकी मिहमानी और ख़ातिरदारी करना गोया मालिक की सेवा करना है। और जो किसी को भाग से संत सतगुरु मिल जावें, जो कि उस मालिक के निज प्यारे और हर वक़्त उस्से मिले रहते हैं, तो उनकी सेवा चाहे जिस क़िसम की होवे, ख़ुद मालिक की सेवा है और इस कार्रवाई से मालिक के चरनों का प्रेम दिन २ बढ़ेगा और मालिक की मेहर और दया सेवा करनेवाले पर दिन २ ज़्यादा आवेगी ॥

११—जब प्रीत ज़्यादा होती है तब प्रीत करनेवाले आपस में बार २ मिलते हैं, इसी तरह जब किसी को मालिक के चरनों में ज़्यादा प्यार और प्रेम आवेगा, तब उसके मन में ज़रूर मिलने के वास्ते यानी दर्शनों की प्राप्ती के लिये तड़प और बेकली पैदा होगी। ऐसा प्रेम बग़ैर सोहबत यानी सतसंग संत सतगुरु और प्रेमी जन के किसी के मन में पैदा नहीं हो सक्ता ॥

१२—संत सतगुरु और प्रेमी जन की महिमां बहुत भारी है, जिस किसी को उनका संग भाग से मिल जावे,

उसी के दिल में उनका और सच्चे मालिक का प्रेम बस जावेगा, और दिन २ तरक़्क़ी पाकर एक दिन प्रीतम से मिला देगा ॥

१३—यह देश बेगाना है यानी मन और माया का घर है, और मृत्यु लोक कहलाता है, जहां कोई थिर यानी क़ायम नहीं रह सक्ता, और हर एक की हालत छिन २ बदलती रहती है। निज घर सुरत का ऊंचे से ऊंचे देश यानी राधास्वामी धाम में है सो जब तक सुरत पिंड देश को छोड़कर उस धाम में न पहुंचेगी तब तक कहीं उसको चैन नहीं मिलेगा ॥

१४—जब तक सुरत मुवाफ़िक़ संतो के भेद के अभ्यास करके अपने निज धाम में न पहुंचेगी, तब तक उस को पूरा चैन नहीं मिलेगा, और जनम-मरन और देह के साथ दुख सुख भोगने का चक्कर नहीं छूटेगा ॥ इस वास्ते सच्चे प्रेमी पर पिंड देश से चल कर ऊंचे देश की तरफ़ चलना और चढ़कर निज घर में पहुँचना वास्ते प्राप्ती दर्शन अपने प्रीतम के ज़रूर है। हाल और भेद रास्ते और उसकी मंज़िलों का और जुगत चलने और चढ़ने की बख़ूबी संत सत-गुर या उनके प्रेमी जन से मालूम हो सक्ती है। इस वास्ते प्रेमी को मुनासिब है, कि पहले खोज संत

सतगुर और उनकी संगत का लगावे और फिर सत-संग में पहुँच कर होशियारी से बचन सुने और समझे, और उनके चरनों में प्रीत लगावे और बढ़ावे और शब्द मारग का उपदेश और उनकी दया और मेहर का बल लेकर नित्त अपने घट में अभ्यास करे, यानी शब्द और स्वरूप के आसरे अपने मन और सुरत को निज घर की तरफ़ चलाता और चढ़ाता रहे ॥

१५—जिस क़दर चाल चलेगी और रास्ता तै होता जावेगा उसी क़दर अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा, और अपने प्रीतम का जलवा थोड़ा बहुत नज़र आता जावेगा, और शौक़ और प्रेम दर्शन का बढ़ता जावेगा, जो एक दिन संत सतगुर की मेहर से धुर धाम में पहुँचा देगा ॥

१६—यह उपदेश और भेद सिर्फ़ राधास्वामी मत की संगत में मिल सक्ता है, और किसी को इसकी ख़बर भी नहीं है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी जीवों को जो अपने मालिक से मिलना चाहते हैं मुनासिब है कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर अभ्यास शुरू करें, और प्रीत और प्रतीत चरनों में राधास्वामी दयाल के बढ़ाते जावें तो एक दिन काम पूरा हो जावेगा ॥

१७—और मालूम होवे कि दुनियां की मुहब्बत चाहे

जिसमें गहरी से गहरी होवे, नाशमान और अंत में दुखदाई है और बारम्बार संसार की तरफ़ झोका दे कर जनम मरन के चक्कर में डालनेवाली है। और सच्चे मालिक के चरनों की प्रीत दिन २ बढ़नेवाली, और रस और आनंद देनेवाली, और जनम मरन और कष्ट और कलेश से छुड़ानेवाली और परम आनंद की अमर धाम में प्राप्त करानेवाली, यानी सच्चे और कुल्ल मालिक से मिलानेवाली है। इस वास्ते सब जीवों को, चाहे औरत होवें या मर्द, लाज़िम है कि इस दुनिया में जहां अनेक तरह की प्रीत कर रहे हैं, थोड़ी बहुत प्रीत साथ परतीत के, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में भी लावें, और उसको संत सतगुर और प्रेमी जन के संग से बढ़ाते रहें ॥

१८—जो कोई मालिक के चरनों में प्रीत सिर्फ़ इस क़दर समझ लेकर कि कोई मालिक ज़रूर है करेगा, वह प्रीत बढ़ेगी नहीं और न उसको कुछ रस और आनंद उस प्रीत का मिलेगा, सिर्फ़ टेकियों के मुवाफ़िक़ वास्ते अदाय रस्म मुक़र्ररा के, थोड़ा बहुत निश्चय हो जावेगा कि ठिक ब्यौहार और तीज त्यौहार को कुछ भेंट पूजा या ख़र्च मालिक के नाम पर करे, लेकिन उमंग और प्रेम नहीं आवेगा, और न प्रेमी जन और

संत सतगुरु की क़दर या तलाश मन में पैदा होगी, इस वास्ते वह प्रीत मामूली तौर पर जिस क़दर कि आम लोगों को होती है बनी रहेगी, और प्रीतम से मिलने या रास्ता तै करके उसके धाम में पहुंचने का कभी ख़्याल भी दिल में नहीं गुज़रेगा, और न उसका भेद व लखाव मालूम होवेगा, फिर ऐसी प्रीत का क्या एतबार हो सक्ता है, क्योंकि ज़रा से झकोले में काल और माया के, उसके डिगमिग हो जाने का ख़ौफ़ है ॥

१६—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जो कोई मालिक के चरनों में थोड़ा बहुत प्यार लावे, उसको मुनासिब है कि पहले अपने प्रीतम को जाने और पहचाने और उसके धाम का भेद लेकर दर्शन के लिये चलना शुरू करे, तब एक रोज़ मेला होकर काम पूरा बनेगा ॥

२०—मालिक की जान पहचान से मतलब यह है कि संत सतगुर से मिलकर उसका भेद जाने, कि वह मालिक कौन है कैसा है और कहां है, और पहचान उसकी मालूम करके अपने घट में चलकर और चढ़कर उसका जलवा और निशान अपने अंतर में देखे क्योंकि जब कुल्ल मालिक सब जगह मौजूद है तो हर एक के घट में भी ज़रूर मौजूद है, तो वहां उसकी पहचान

करना चाहिये, और घट में ही पहचान मुमकिन है, बाहर जहां कि वह अनेक ग़िलाफ़ों में पोशीदा और गुप्त है, कोई उसकी पहचान नहीं कर सक्ता। अलबत्ता जब कि अपने घट में दर्शन कर लेवे, तब बाहर भी सब जगह दर्शन कर सक्ता है, नहीं तो दोनों जगह माया का तमोगुन यानी अंधेरा छाया हुआ है बिदून घट की जान पहचान के मालिक के चरनों की प्रीत का फल जैसा चाहिये नहीं मिल सक्ता है अब मुक़ाम ग़ौर का है कि वास्ते उद्धार और कल्यान जीव के किस क़दर ज़रूरत संत सतगुरु और प्रेमी जन के संग और सोहबत की है, क्योंकि बग़ैर उनके सतसंग के न तो भेद मालूम हो सक्ता है और न जुगत चलने की दरियाफ़्त हो सक्ती है, और न दया और मेहर जिसकी मदद से चलना होगा प्राप्त हो सक्ती है ॥

बचन-४१

मालिक कुल्ल की तरफ़ से बावजूदे-कि वह घट में मौजूद है और कभी २ बोलता भी है जीव बेपरवाह और भूले हुए हैं, जो ख़बरदार होकर कुछ भी प्रीत या नाता उसके चरनों में जोड़ें, तो उनके जीव का कारज सहज बन जावे ॥

१—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमां और उनकी क़ुदरत की सिफ़त किसकी ताक़त है कि बर्णन कर सके, बहुत से मुआमलों में अक़्ल हैरान रहती है और कुछ समझ नहीं सक्ती ॥

२—इसी तरह उसकी मेहर और दया यानी फ़ज़ल और करम भी जीवों बल्कि कुल्ल रचना के ऊपर अपार और अनंत है कि जिसका शुकराना कोई शख़्स पूरा २ अदा नहीं कर सक्ता ॥

३—बहुत सी बख़्शिशें कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की ऐसी हैं कि जिनकी क़दर आदमी को बिल्कुल नहीं मालूम होती, और हाल यह है कि वह बख़्शिशें

ऐसी ज़बर और भारी हैं कि उन पर कुल्ल की ज़िंदगी और देह और दुनिया की कार्रवाई का मदार है, यानी बग़ैर उनके कोई जीव एक दिन बल्कि एक दम भी ज़िंदा नहीं रह सक्ता, और न कुछ काम कर सक्ता है। जैसे सूरज की रोशनी और गरमी और पानी और हवा बग़ैरा, और देह में इन्द्रियां जो कि कुल्ल कार्रवाई के औज़ार हैं, और जिनके बग़ैर आदमी कोई काम अपना या पराया नहीं कर सक्ता ॥

४—इन चीज़ों में से इन्द्रियों की यानी आंख कान नाक ज़बान हाथ और पांव पेशाब और पाख़ाने की इंद्री की क़दर जब मालूम होती है, जब कोई शख़्स शफ़ाख़ाने और अपाहिजख़ाने और कंगालघर और कोढ़ीख़ाने वग़ैरे में जाकर बीमारों का हाल देखे, कि किस २ तरह से अंगहीन और अनेक सख़्त बीमारियों में मुब्तला और गिरफ़्तार हैं ॥

५—दुनिया में जो कोई किसी के साथ अदना और बहुत थोड़ा सलूक करता है, वह उसको नहीं भूलता, और उसके एवज़ में कुछ ख़ातिरदारी और ख़िदमत उसकी दिल से करना चाहता है, और जब मौक़ा मिले तब ही करता है। फिर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का किस क़दर शुकराना और उनके चरनों की ख़िद-

मत बएवज़ उन न्यामतों और बख़्शिशों के, जो वे कुल्ल जीवों पर हर रोज़ और हर दम कर रहे हैं वाजिब और फ़र्ज़ है ॥

६—फिर ख़्याल करो कि दुनिया में बड़े आदमियों जैसे राजा महाराजा और अमीर और गुनवान शख़्शों की जैसे हुनरवाले बिद्यावान बुद्धिवान रूपवान यानी ख़ूबसूरत, और धनवान यानी दौलतमंद और गाने बजाने और तरह २ का अजीब तमाशा करनेवालों की किस क़दर ख़ातिर और ख़िदमत और उनसे मिलने के वास्ते अपना रुपया और वक़्त ख़र्च करते हैं, लेकिन कुल्ल मालिक जो कि सर्ब समर्थ और सर्ब शक्तिमान और सब बड़ों से बड़ा और महा बड़ा और महा सुन्दर है, उसके साथ मिलने और उसकी ख़िदमत और सेवा करने की चाह किस क़दर कम लोगों के मन में रहती है ॥

७—इसमें कुछ शक नहीं कि वह कुल्ल मालिक हर एक को नज़र नहीं आता, और न हर एक को आसानी से मिल सक्ता है, लेकिन जिस किसी के मन में सच्चा शौक़ और दर्द उसके दर्शन और सेवा का पैदा होवे उसको वह ज़रूर मिलता है, और अपनी ख़िदमत और सेवा भी मुवाफ़िक़ ख़ाहिश सच्चे शौक़वालों के, जिनको प्रेमी और आशिक़ और भक्त कहते हैं करा सक्ता है, इसकी शरह आगे की जावेगी ॥

८— फिर ग़ौर करने का मुक़ाम है कि दुनिया में कुल्ल काम प्रीत और शौक़ से चल रहे हैं, और सब लोग जिन २ से उनको काम पड़ता है, या कुछ उनका मतलब निकलता है, बराबर दीनता और मुहब्बत कर रहे हैं, और इस मुहब्बत में बहुत से दरजे हैं, जैसे माता पिता इस्त्री और पुत्र और धन और माल और नज़दीक और दूर के रिश्तेदार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और नौकर चाकर और ब्यौहारी वग़ैरे २ से दरजे ब दरजे प्रीत करते हैं। फिर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से जो कुल्ल रचना के सच्चे माता पिता हैं, और जिनकी बराबर कोई हरदम और हर वक़्त का अंगसंगी और हितकारी और सहाई नहीं है, और जो सब तरह का सामान दुनिया में आराम और आसाइश और गुज़रान का दे रहा है, किस क़दर प्रीत और मुहब्बत और दीनता करना हर एक शख़्स पर वाजिब और लाज़िम और फ़र्ज़ है ॥

९—यह बात सही है कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल (जैसा कि ऊपर कहा गया) किसी को नज़र नहीं आते, लेकिन जो कोई इरादा करे वह पता और भेद उनका भेदी और उनके प्यारों से दरियाफ़्त करके, आसानी के साथ उनके चरनों में प्रीत और

मुहब्बत कर सक्ता है, क्योंकि वह जबकि सब जगह मौजूद हैं तो हरएक के घट में भी ज़रूर मौजूद और हाजिर नाज़िर हैं, वहां यानी अपने अंतर में हर एक शख़्स पता और भेद और जुगत दरियाफ़्त करके उनके चरनों में प्रीत कर सक्ता है, और उलट कर उनकी मेहर और दया को भी अपने अंतर में परख सक्ता है ॥

१०—फिर जो इस क़िस्म के शौक़ और मुहब्बत वाले लोग बहुत कम नज़र आते हैं, और बहुत से इस तरफ़ से ग़ाफ़िल और बेपरवाह और दुनिया के ऐश और लज्ज़त और भोगों में गिरिफ़्तार दिखलाई देते हैं इसका सबब यह है कि यातो उनके दिलों में शौक़ और खोज नहीं है, और दुनिया और उसके सामान ही को बड़ा समझ कर उसी की तलाश और मुहब्बत और मिहनत में फंसे रहते हैं, या उनको कोई सच्चा भेदी और प्राप्ती वाला नहीं मिला, और न उन्होंने उसकी तलाश की क्योंकि जो कोई जिसकी तलाश दिल और जान और मिहनत के साथ करता है, वह उसको ज़रूर मिलता है ॥

११—अब समझना चाहिये कि दुनिया और उसके सामान और दुनियादारों की प्रीत करनेवाले, मुवा-

फ़िक्र अपनी ज़बर ख़ाहिश दुनियावी के हमेशा दुनिया में फंसे रहेंगे, और बारम्बार दुनिया में पैदा होकर उसके भोगों में गिरिफ़्तार रहेंगे, और जो दुख सुख और जनम मरन देह के साथ लाज़मी है वह सहते रहेंगे, क्योंकि दुनिया की प्रीत थोड़े सुख और बिशेष दुख का दाता है, और एक दिन ज़रूर टूट और छूट जावेगी, और उस वक़्त दुख भारी होवेगा। सिवाय इसके दुनिया की प्रीत कच्ची और हमेशा बदलनेवाली और कभी २ ज़रा २ सी बात पर इसी ज़िंदगी में टूट जानेवाली है, और सख़्ती और तकलीफ़ में और ख़ास कर मौत के वक़्त कुछ सहायता नहीं कर सक़ी ॥

१२—बरख़िलाफ़ इसके मालिक के चरनों की प्रीत और उसके प्यारों की मुहब्बत जो सच्ची होवे तो दिन २ बढ़नेवाली और ख़ुशी और आनन्द देनेवाली और सख़्ती और तकलीफ़ और मौत के वक़्त सहायता करनेवाली, और एक दिन देहियों के बंधन से बचाने वाली, और सुख दुख और जनम मरन के चक्कर की छुड़ानेवाली, और अमर धाम में पहुँचानेवाली, और पूरन आनन्द और अमर सुख की प्राप्ती करानेवाली है। जिस किसी के दिल में थोड़ी सी भी ऐसी प्रीत

पैदा हो जावे, वह एक दिन उसको अख़ीर दरजे पर पहुंचा कर छोड़ेगी, और फिर उसी जीव को बड़ भागी और दया और मेहर का अधिकारी समझना चाहिये। लेकिन शर्त यह है कि वह प्रीत प्रीतम की जान पहचान और प्रतीत के साथ होवे कि जिस्से अपने प्रीतम यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के अपने घट में हाज़िर नाज़िर होने का यक़ीन होवे, क्योंकि ग़ायबाना और बेख़बरी की प्रीत कुछ फ़ायदा नहीं दे सक़ी है ॥

१३—ग़ायबाना और बेख़बरी की प्रीत यह है कि आम दस्तूर और पुरानी रवायत यानी डुकरिया पुरान के मुवाफ़िक़ हर कोई समझता है, कि कोई मालिक इस रचना का है, और इतनी समझ लेकर मन से थोड़ा बहुत अदब और तीज त्यौहार और ठिक ब्यौहार पर, और जब कोई मुहताज और मंगता आजावे, तब कुछ जिन्स और नक़्द या खाना तक़सीम करता है। लेकिन इस बात से बेख़बरी है, कि वह मालिक कौन है कैसा है और कहां है और कैसे मिले, और न इस भेद और हाल के दरियाफ़्त और तहक़ीक करने का खोज है और न शौक़ है। फिर ऐसी साधारन प्रीत का पूरा ऐतबार नहीं हो सक़ा

और न वह तरक़्क़ी कर सक़ी है, बल्कि ज़रासे झकोले में विद्या और माया के ढीली और गुम हो जाती है। ऐसे प्रीतवान लोग दुनियांदार कहलाते हैं, उनके मन से मुख्यता यानी क़दर दुनिया और उसके सामान मिसल इस्त्री और पुत्र और मान बड़ाई और धन माल वग़ैरः की ज़्यादा रहती है, और इनके मुक़ाबले में मालिक का यक़ीन और उसकी प्रीत बहुत हलकी और कमज़ोर रहती है ॥

१४—सच्ची और रोज़ अफ़ज़ूं यानी दिन २ बढ़ने वाली प्रीत वह है, कि मालिक की जान पहिचान के साथ होवे, और यह जान पहिचान मालिक के सच्चे और पूरे प्रेमी और भेदी के सतसंग से आवेगी ॥

१५—पूरे प्रेमी और पूरे भेदी कुल्ल मालिक के संत सतगुरु हैं, कि जिन को उसका निज पुत्र या निज मुसाहब या निज कारकुन कहना चाहिये। वे अपने मालिक से कभी जुदा नहीं होते, यानी जब धुर पद में जो कि मालिक का धाम है रहें तब उसके हर वक़्त पास रहते हैं, और जब उस की मौज से देह धर कर दुनियां में आवें, तब भी उस्से जुदा नहीं होते, यानी उनकी सैर हर दो मुक़ाम यानी दुनिया और निज धाम में बराबर जारी रहती है। जैसे समुद्र

और उसकी लहर जो कि कोसों तक ख़ुश्की में चली जाती है, और ज़ाहरा लहर रूप दिखला कर उस्से किसी क़दर जुदा मालूम होती है, मगर असल में कभी जुदा नहीं होती, और सिल्सिला उसका बराबर समुद्र के साथ लगा रहता है, और जब सिमटती है तब वही असली रूप यानी फिर समुद्र रूप हो जाती है ॥

१६—जो किसी को संत सतगुरु न मिलें लेकिन उन के सच्चे अभ्यासी और प्यारे प्रेमी जन से मेला हो जावे, तो उनके सतसंग से भी जान पहचान और भेद और जुगत मिलने की साथ कुल्ल मालिक के दरियाफ़्त हो सक्ती है, और उनकी मदद से वह शख़्स अभ्यास कर के अंतर में फ़ायदा उठा सक्ता है, और रफ़्ते २ उसका सूत भी कुल्ल मालिक के चरनों में लग जावेगा । और वह शख़्स दया और मेहर का अधिकारी हो जावेगा, कि जिस्से उसकी प्रीत और प्रतीत संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में दिन दिन बढ़ती जावेगी, और मौज से संत सतगुरु का भी दर्शन मिल जावेगा, और फिर उनकी दया से एक दिन कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा, यानी उस के जीव का कारज बन जावेगा ॥

१७—बग़ैर संतों के सतसंग के सफ़ाई अंतर और बाहर को नहीं हो सक्ती। कुल्ल जीवों के मन इस दुनिया में मलीन हैं, और सिवाय बासना भोग बिलास और मान बड़ाई और कुटम्ब परवार और धन माल के, उसके मन में कोई दूसरा ख़्याल ऐसा मज़बूत नहीं रहता है। उमर भर दुनिया के हासिल करने के लिये मिहनत और मशक्कत करते हैं, और जानते हैं कि एक दिन सब को छोड़ना पड़ेगा फिर भी कुटम्ब परवार और धनमाल और मान बड़ाई का ऐसा बंधन ज़बर और मज़बूत है, कि जिसको ढीला करते या छोड़ते (ख़ास कर परमार्थ के लिये) जान सी जाती है। यह सब बंधन संतों और उनके प्रेमी जन के सतसंग से ही ढीले हो सक्के हैं, और बजाय उनके सच्चे और कुल्ल मालिक राधा स्वामी दयाल के चरनों की प्रीत हिरदे में पैदा हो सक्ती है और आइंदे के वास्ते दुनिया की चाहें भी दूर हो सक्ती हैं॥

१८—जब इस तरह मन की किसी क़दर सफ़ाई हासिल हो जावे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की महिमां चित्त में बस जावे, और दुनिया और उसका सामान नाश मान और

ओछा सही २ नज़र आवे, तब उपदेश लेकर यानी जुगत निज धाम की तरफ़ चलने की दरियाफ़्त करके जो अंतर में शौक़ के साथ अभ्यास किया जावेगा तो रस और आनंद मिलेगा, और दया के परचे नज़र आवेंगे, तब प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती और पकती जावेगी, और दिन २ तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

१६—वग़ैर सतसंग के किसी के संसै और भरम और संसार में फ़ज़ूल और ग़ैर वाजिब और बे फ़ायदा पकड़ें दूर और ढीली नहीं होवेंगी, और न चाह भोग बिलास की काटी जावेगी, और न परमार्थ और सच्चे मालिक और संत सतगुरु और उनके प्रेमीजन और सतसंग की महिमा और क़दर चित्त में समावेगी। फिर मन बदस्तूर मलीन रहेगा, और जब तक सफ़ाई न होगी, यानी दुनिया और उसके सामान की मुहब्बत और चाह कम या दूर न होवेगी, तो मालिक और उसके प्रेमी जन का प्रेम, कैसे ऐसे नापाक हिरदे में पैदा हो सक्ता और ठहर सक्ता है ॥

२०—इस वास्ते जिस किसी के मन में सच्चा दर्द और खोज सच्चे मालिक का पैदा हुआ है, उसको चाहिये कि पहिले राधास्वामी संगत में जावे, और कोई दिन सतसंग करे, तब उसको आप ख़बर पड़

जावेगी, कि जीव के कल्यान या अपने सच्चे मालिक से मिलने के वास्ते, क्या जतन और किस तरह की रहनी इख़्तियार करना चाहिये और कहां उसको ढूंढ़ना चाहिये। बाहर जो कोई तलाश करे तो कभी नहीं मिलेगा। जिसको मिला है या मिलेगा वह घट में मिलेगा और बग़ैर सुरत शब्द मारग और संत सतगुरु की दया के घट में चलना और चढ़ना और धुर पद में पहुंचना हरगिज़ मुमकिन नहीं है। और इस वक़्त में सिवाय राधास्वामी मत और संगत के, घट का पूरा २ भेद और आसान तरीक़ा चलने का, जिसकी कमाई हर कोई इस्त्री या पुर्ष जवान और बूढ़ा सहज में कर सक्ते हैं, और कहीं या किसी दूसरे मत में मिल नहीं सक्ता ॥

२१—जब किसी को सच्ची प्रीत और प्रतीत थोड़ी या बहुत सच्चे मालिक के चरनों में आवेगी तो उसका निशान यह है, कि उसके हिरदे में थोड़ी या बहुत उमंग वास्ते दर्शन और सेवा करने मालिक के ज़रूर पैदा होगी। लेकिन जो कि कुल मालिक अरूप और बिदेह हैं, तो सेवा करना और मिलना किस तरह बन सक्ता है, इसकी निसबत संतों ने जो बचन फ़रमाया है वह आगे लिखा जाता है ॥

२२—जैसे बालबच्चों की ख़ातिरदारी और सेवा करने से उनके मा बाप ख़िदमत करनेवाले से राज़ी होते हैं, और वह सेवा और मुहब्बत अपनी ही सेवा और मुहब्बत समझते हैं, और सेवा करनेवाले को फल यानी एवज़ आप देते हैं, ऐसे ही कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल, जो कोई उनके प्यारे संत सतगुरु और प्रेमीजन की सेवा करे और उनसे प्रीत का नाता जोड़े, उससे वे आप राज़ी और प्रसन्न होते हैं, और वह सेवा और मुहब्बत खास अपनी सेवा और मुहब्बत मान कर उसको प्रेम और भक्ती की दौलत आहिस्ते २ बख़्शते हैं ॥

२३—संत सतगुरु को जो मालिक से हरदम मिले रहते हैं, मालिक का परम प्यारा पुत्र या खुद उसका स्वरूप समझना चाहिये, और जो सेवा उनकी की जावे, वह ख़ुद मालिक की सेवा माननी चाहिये। और जो संत सतगुरु के प्रेमी और भक्त हैं, उनको भी मालिक के प्यारे पुत्र जानना चाहिये, जो कोई उनके साथ मुहब्बत करे या उनकी किसी क़िसम की सेवा या ख़िदमत किसी से बन आवे, उसको भी मालिक और संत सतगुरु अपनी सेवा समझ कर क़बूल और मंज़ूर फ़रमाते हैं, और उसका फल तरक़्क़ी प्रीत और प्रतीत की आप बख़्शते हैं ॥

२४—संत सतगुरु का दर्शन गोया मालिक का दर्शन है, और उनका संग मालिक का संग है, और उनकी दया और मेहर की नज़र जिस पर पड़ी गोया मालिक की मेहर उस पर हुई। वास्ते तसदीक़ और परमान इस बात के चंद कड़ियें नीचे लिखी जाती हैं॥

क़ौल कबीर साहब

साध मिले साहब मिले अंतर रही न रेख।
मन्सा बाचा कर्मना साधू साहब एक॥

क़ौल मौलवी रूम

मालिक का बालक गुरु पूर।
मालिक का हरदम मंज़ूर॥
जो मालिक का चहे दीदार।
जा तू बैठ गुरू दरबार॥
परम पुर्ष सम गुरु को जान।
बिन जिभ्या कहैं बचन सुजान॥
हक़् ने पैग़म्बर को समझाया कि मैं।
मिल् नहीं सक्का ज़मी असमान में॥
ऊंचे और नीचे ठिकाने में नहीं।
अर्श कुर्सी पर भी मैं रहता नहीं॥
दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा।
जो मुझे चाहे तो मांग उनसे तू जा॥

क़ौल दूसरा

मस्जिदे हस्त अंदरूने औलिया।
सिज्दगाहे जुम्लहःहस्त आंजा ख़ुदा॥

अर्थ

औलियाओं का हिरदा मस्जिद है और वहीं ख़ुदा को सिज्दा करना चाहिये॥

चूंकि करदी ज़ातेमुर्शदरा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल॥

अर्थ

जबकि तूने गुरू के स्वरूप को माना तो उसमें ख़ुदा और पैग़म्बर दोनों आ गये॥

मन ख़ुदारा आशकारादीदः अम्।
सूरते इन्सां ख़ुदारा दीदः अम्॥

अर्थ

मैंने मालिक को प्रघट इन्सान के स्वरूप में देखा॥

आफ़्ताबे मतलये अन्वार ज़ात।
रोशन अज़ माहे जबीने औलियास्त्॥

अर्थ

सूरज ब्रह्म साध के चंद्र स्वरूप से रोशन है॥

रामायन

मेरे मन प्रभु अस बिस्वासा। राम से अधिक राम कर दासा॥

क़ौल गुरू नानक

गुरु परमेश्वर एको जान । भूला काहे फिरे अजान ॥

क़ौल नाभा जी

भक्ति भक्त भगवंत गुर नाम चतुर वपु एक ।
तिनके पग बंदन करत नाशें बिघन अनेक ॥

श्लोक भागवत

नाहं बसामि बैकुंठे योगिनां हृदय न च
मद्भक्ता यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठामि नारद

अर्थ

हे नारद न मैं बैकुंठ में बस्ता हूं और न योगियों के हिरदे में निवास करता हूं लेकिन जहां मेरे भक्त मेरा गुणानुबाद गाते हैं वहां मेरा निवास है ॥

श्लोक

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्बिश्नुगुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अर्थ

गुरुही ब्रह्मा बिश्नु महादेव और परब्रह्म हैं ॥
इसलिये ऐसे गुरु को मेरी नमस्कार है ॥

सारबचन

सेवा कर तन मन धन अरपे ।
सत्तपुर्ष सम सतगुरु थरपे ॥

२५—इस बिधि के मुवाफ़िक़ जो ऊपर लिखी गई, मालिक के साथ मिलना और उसकी सेवा करना और उसके प्यारे जन से मिलना और उनकी मुहब्बत और सेवा करना इसी देह में और इसी दुनिया में मुमकिन है। पर शर्त यह है कि सच्चा शौक़ और दर्द मन में होना चाहिये, नहीं तो दुनिया के अभागी लोग संत सतगुरु और साध गुरु और उनके प्रेमी और भक्त जन की निंद्या करते हैं, और उनसे विरोध रख कर, और अनेक तरह के बिघन प्रेमी जन के सतसंग और भक्ती की कार्रवाई में डालकर अपना भाग घटाते हैं। दुनिया में भी दस्तूर है कि जो बादशाह और महाराजे की तरफ़ से गवर्नर या नाज़िम या सूबा किसी देश में मुक़र्रर होता है तो जो कुछ उसकी नज़र या भेंट की जावे, या किसी क़िसम की ख़िदमत सरकारी किसी से बन आवे, वह भेंट और ख़िदमत बादशाह और महाराजे की समझी जाती है, और उसका फल यानी एवज़ बादशाह और महाराजे की तरफ़ से मिलता है, फिर इसी तरह संत और साध मालिक के कुंवर और नायब इस दुनिया में हैं, जिस किसी को थोड़ी या बहुत उनकी पहिचान आ जावे, वही बड़भागी है, और उसी को एक दिन मालिक के चरनों के प्रेम की दौलत मिलैगी ॥

२६—जो कि मालिक अपने बिदेह स्वरूप से घट २ में मौजूद है, तो उस स्वरूप या उसके जलवे का दर्शन भी इसी देह में संत सतगुरु की दया से मुमकिन है। यानी जब वे अपनी मेहर से सुरत शब्द मारग का उपदेश देवेंगे, और अंतर में अभ्यास करावेंगे, तब प्रेमी जन आहिस्ते २ अपने घट में सूक्षम से सूक्षम और अति सूक्षम स्वरूप होते हुए और मालिक का जलवा और प्रकाश रास्ते में देखते हुए, एक दिन निज धाम में पहुंच कर, उसका पूरा दर्शन पा सक्के हैं। और जब तक कि दयाल देश में न पहुंचें, तब तक उनको मालिक शब्द स्वरूप और संत सतगुरु रूप से, जब तब अभ्यास की हालत में, बराबर अपनी मेहर और दया से दर्शन देता रहता है, कि जिस्से उनकी प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जाती है, और दुनिया और उसका सामान उनकी नज़र में तुच्छ और ओछा होता जाता है ॥

२७—जो कोई ऐसी समझ लेकर और सतसंग करके, मालिक की भक्ती और उसके चरनों में प्रीत करेगा, वही एक दिन महल में दख़ल पावेगा। और जो बिना पहिचान थोड़ी बहुत प्रीत और भाव करते हैं, उस प्रीत का फ़ायदा थोड़ा सा सुख दुनिया में, या ऊंचे

लोकों में मिल जावेगा, लेकिन सच्चे मालिक का दीदार हासिल नहीं होगा, और जीव का सच्चा उद्धार नहीं होगा ॥

२८—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने गृहस्त में रह कर और दुनिया के सब कारोबार और रोज़गार होशियारी से करते हुये जहां सैकड़ों जगह और बहुत से आदमियों से प्रीत करते हैं, कुछ थोड़ी या बहुत मोहब्बत मालिक के चरनों में भी लावें, और यह मोहब्बत भेद और महिमां के साथ होना चाहिए, तो उनको दुनिया में भी आराम और आइंदा को सुख मिलैगा, नहीं तो आख़ीर वक़्त पर कष्ठ और कलेश सहैंगे, और काल के हाथ से बहुत दुक्ख पावेंगे जैसा कि मुर्दों की हालत और सूरत से ज़ाहिर होता है ॥

२९—यह न समझना चाहिये कि मालिक घट में मौजूद नहीं है, वह हमेशा हाज़िर और नाज़िर है बल्कि बोलता है यानी जब कोई शख़्स कोई बुरा काम या भारी पाप करना चाहता है, उस वक़्त वह उसके अंतर में बोलता है और कहता है कि यह काम न कर नहीं तो दुक्ख पावेगा, फिर चाहे यह शख़्स उस नसीहत को माने या नहीं, मालिक की दया इतने नीचे

उतर कर जीव को समझाती है, और बुरे काम से बाज़ रखना चाहती है, पर जीव ऐसे बचन को कम सुनते हैं, और उसका खोज भी नहीं लगाते कि किस मुक़ाम से उस बचन की धार आती है ॥

राधास्वामी मत की पुस्तकों का

संशोधित सूचीपत्र

पद्य (हिन्दी)

		अजिल्द	सजिल्द
१. सार बचन छंद बंद, पहला भाग		२०.००	२२.००
२ सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग		१२.००	१४.००
३. प्रेमबानी, पहला भाग		२१.००	२४.००
४. प्रेमबानी, दूसरा भाग		२०.००	२२.००
५. प्रेमबानी, तीसरा भाग		२३.००	२६.००
६. प्रेमबानी चौथा भाग	....	१५.००	१७.५०
७ संत संग्रह पहला भाग	...	१.७५	
८. संत संग्रह, दूसरा भाग		४.५०	—
९. प्रेम प्रकाश			
१०. बिनती-प्रार्थना		२.२५	३.५०
११. नियमावली	....	२.५०	५.००

गद्य (हिन्दी)

१२. सार बचन बार्तिक		७.५०	९.५०
१३. आखिरी बचन स्वामीजी महाराज		०.५०	—
१४. प्रेमपत्र, पहला भाग		१९.००	२१.००
१५. प्रेमपत्र, दूसरा भाग		२८.००	३१.५०
१६. प्रेमपत्र, तीसरा भाग		१२.५०	१४.५०
१७. प्रेमपत्र, चौथा भाग		२६.००	२८.००
१८. प्रेमपत्र, पाँचवाँ भाग		१०.५०	१२.५०
१९. प्रेमपत्र, छठा भाग		७.००	९.००
२०. जुगत प्रकाश		७.००	८.००
२१. सार उपदेश		२.५०	—
२२. प्रेम उपदेश		३.७५	—
२३. राधास्वामी मत सन्देश		३.५०	—
२४. राधास्वामी मत उपदेश		१.२५	—
२५. निज उपदेश		१.२५	—
२६. प्रश्नोत्तर सन्त मत		१.००	—
२७. छाँटे हुए बचन महात्माओं के		१.००	—
२८. गुरु उपदेश		०.५०	—

	अजिल्द	सजिल्द
२९. बचन महाराज साहब	८.००	१०.५०
३०. बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग	२१.००	२३.००
३१. बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग	१२.५०	१४.००
३२. बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग	१२.५०	१४.००
३३. बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग	२१.००	२४.००
३४. जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज	७.००	८.००
३५. जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज	—	—
३६. शब्द कोश, संत मत बानी	—	२७.००
३७. लोक-परलोक हितकारी	४.००	—
३८. मौलाना रूम के दृष्टान्त और औलियाओं की कथाएं	८.५०	११.००
३९. समाध पुस्तिका	—	—
बँगला		
४०. R. S. Mat Sandesh	२.२०	—
४१. Prasnotter	१.९०	—
४२. सार उपदेश	२.८०	—
गुजराती		
४३. राधास्वामी मत उपदेश	३.००	—
४४. राधास्वामी मत सन्देश	५.००	—
४५. सतसंगियों ने आश्वासन	२.५०	—
४६. सार बचन बार्तिक		१०.००
सिंधी		
४७. राधास्वामी मतसंदेश	१.००	
अँग्रेजी		
४८. राधास्वामी मत प्रकाश Radhasoami Mat Prakash	—	१०.००
४९. डिस्कोरसेज औन राधास्वामी फ़ेथ Discourses on Radhasoami Faith	—	२०.००
५०. फेल्प्स साहब के नोट्स Phelps' Notes	—	१५.००
५१. ए-सोलेस-टू-सतसंगीज A Solace to Satsangis	२.५०	—

सेक्रेटरी, राधास्वामी सतसंग,
स्वामी बाग, आगरा-२८२००५